संयम ◆ संस्कार ◆ संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-22 अंक- 353
पृष्ठ 8
मंगलवार
15 सितम्बर 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- मुंहासे और वजन घटाने में मुलेठी..
विचार- भारत की सार्वभौम क्रेडिट रेटिंग...
खेल- 'ट्रॉफी चोर' के नारों से गूंजा...

लोक आयुक्त संगठन स्थापना दिवस का सीएम योगी ने किया शुभारंभ

लोक सेवक जनता के प्रति जवाबदेह : सीएम योगी

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश लोक आयुक्त संगठन अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने पर लखनऊ में स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित कर रहा है। गोमतीनगर स्थित लोक आयुक्त कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। समारोह की अध्यक्षता लोक आयुक्त न्यायमूर्ति संजय मिश्र कर रहे हैं। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई। लोक आयुक्त संजय मिश्र ने पौधा भेंट कर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का स्वागत किया। स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ लोक आयुक्त प्रशासन की स्मारिका और सूचना पुस्तिका का विमोचन करेंगे। कार्यक्रम में लोक आयुक्त संगठन से जुड़े अधिकारी और अन्य गणमान्य लोग भी मौजूद हैं। समारोह में संगठन के पांच दशकों के सफर, कार्यप्रणाली और उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिए विशेष प्रदर्शनी भी लगाई गई है। उत्तर प्रदेश लोक आयुक्त संगठन भ्रष्टाचार से संबंधित शिकायतों की स्वतंत्र, निष्पक्ष और कानून के अनुरूप जांच करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्थापना से अब तक संगठन ने किस तरह काम किया और उसकी कार्यप्रणाली में समय के साथ क्या बदलाव आए, इसकी जानकारी प्रदर्शनी में दी जा रही है। प्रदर्शनी के माध्यम से संगठन के गठन से लेकर अब तक के महत्वपूर्ण पड़ावों और प्रमुख उपलब्धियों को क्रमवार प्रस्तुत किया जाएगा। स्वर्ण जयंती समारोह की विशेष प्रदर्शनी में लोक आयुक्त संगठन की पांच दशक की यात्रा को दर्शाया गया है। इसमें संगठन के गठन, शिकायतों की जांच की प्रक्रिया, कार्यप्रणाली और समय–समय पर किए गए महत्वपूर्ण कार्यों की जानकारी शामिल है। इस आयोजन के जरिए लोक आयुक्त संगठन के 50 वर्षों के सफर और भ्रष्टाचार से जुड़ी शिकायतों के निस्तारण में उसकी भूमिका को सामने रखा जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि लोक सेवक जनता के प्रति जवाबदेह होते हैं। कई बार किसी व्यक्ति को ताकत मिलने के बाद उसके व्यवहार में अहंकार आ जाता है। सीएम योगी ने कहा, प्रभुता पाई काहि मद नाहीं यानी सत्ता या अधिकार मिलने के बाद व्यक्ति के व्यवहार में अहंकार नहीं आना चाहिए। लोकायुक्त जैसी संस्थाएं लोक सेवकों को उनकी जिम्मेदारी, जवाबदेही और नैतिक दायित्व का एहसास कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि लोक सेवकों को जनता के प्रति जवाबदेह बनाए रखने के लिए लोकायुक्त जैसी संस्थाओं का मजबूत होना जरूरी है। ताकत मिलने के बाद कोई लोक सेवक उच्छृंखल और उद्दंड न हो, इसके लिए ऐसी व्यवस्था जरूरी है, जो उसे उसकी जिम्मेदारी और मर्यादा का एहसास कराए।

दिशा सालियान केसः बॉम्बे हाई कोर्ट के आदेश के बाद सीबीआई ने दर्ज की एफआईआर

नयी दिल्ली,एजेंसी। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने दिवंगत अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की पूर्व मैनेजर दिशा सालियान की मौत के मामले में प्राथमिकी दर्ज की है। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। इस महीने की शुरुआत में बंबई उच्च न्यायालय ने सालियान की मौत की जांच सीबीआई से कराने का आदेश दिया था और छह साल तक प्राथमिकी दर्ज नहीं करने के लिए मुंबई पुलिस को फटकार लगाते हुए कहा था कि उसकी जांच से ''जवाब मिलने के बजाय और सवाल खड़े होते हैं।'' पीठ ने छह साल तक मामले को केवल दुर्घटनावश मौत के रूप में देखने के लिए पुलिस की आलोचना की थी और जांच में ''स्पष्ट विसंगतियों'' की ओर इशारा किया था। राजपूत की मैनेजर के रूप में कुछ समय काम कर चुकीं सालियान की आठ जून 2020 को मुंबई के मलाड इलाके में एक आवासीय इमारत की 12वीं मंजिल से गिरने के बाद मौत हो गई थी।

रेप मामले में तरुण तेजपाल ने किया सरेंडर, एससी ने दी थी तीन हफ्ते की मोहलत

नई दिल्ली,एजेंसी। मशहूर न्यूज़ मैगज़ीन 'तहलका' के जाने–माने पूर्व एडिटर–इन–चीफ़ तरुण तेजपाल ने सोमवार को गोवा की मापुसा कोर्ट में सरेंडर कर दिया। यह 2013 के रेप केस से जुड़ा मामला है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें सरेंडर करने का निर्देश दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने 63 साल के पूर्व एडिटर को सज़ा के ख़िलाफ़ उनकी अपील पर सुनवाई शुरू होने से पहले सरेंडर करने के लिए तीन हफ़्ते का समय दिया था। तीन हफ़्ते की यह समय–सीमा कल खत्म हो रही है। बॉम्बे हाई कोर्ट की गोवा बेंच ने 6 अगस्त को तेजपाल को दोषी ठहराया और 2013 में अपनी एक पूर्व सहयोगी के साथ रेप करने के आरोप में 10 साल की जेल की सज़ा सुनाई। कोर्ट ने इस मामले में 2021 में उन्हें बरी किए जाने के फ़ैसले को पलट दिया था। तेजपाल का कहना है कि वह खुद पीड़ित हैं। पिछले महीने, सुप्रीम कोर्ट ने तेजपाल की उस अर्ज़ी को खारिज कर दिया था जिसमें उन्होंने बॉम्बे हाई कोर्ट के दोषी ठहराने वाले फ़ैसले के ख़िलाफ़ सुप्रीम कोर्ट में अपनी अपील लिस्ट होने तक सरेंडर से छूट मांगी थी।

Ranno Manno Hindi Kahani Sangrah by Umesh Shrivastav (उमेश श्रीवास्तव) https://amzn.in/d/00xK14RX

समीक्षा

कहानी संग्रहः रन्नो मन्नो
लेखकःउमेश श्रीवास्तव
प्रकाशकः लोकरंजन प्रकाशन
कीमतः 100रुपए

शहर समता समाचार पत्र के संपादक,लोकप्रिय पत्रकार और प्रख्यात साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव का नवीनतम कहानी संग्रह रन्नो मन्नो लोकरंजन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है। संग्रह की 16 कहानियां अपने आसपास के परिवेश और माहौल को खूबसूरती के साथ प्रदर्शित करने में सक्षम हैं। उमेश श्रीवास्तव ने प्रायः साहित्य की समस्त लोकप्रिय विधाओं में अपनी कलम चलायी है। इनका रचना संसार समाज में घट रही घटनाओं को बेधड़क ढंग से व्यक्त करता है। शीर्षक कहानी गरीबी की विवशता को और इस विवशता से उपजी कड़वी सच्चाई को निडरता के साथ पाठकों के सम्मुख लाती है। उमेश श्रीवास्तव संवेदनशील होने के साथ साथ सामाजिक यथार्थ को बखूबी पहचानते हैं।

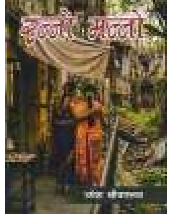

इस संग्रह की प्रत्येक कहानी अपने भीतर एक अलग अनुभव, कुछ ज्वलंत प्रश्न और जीवन संदेश समेटे हुए है अतः संग्रह की कहानियाँ पाठक को मात्र प्रभावित नहीं करतीं अपितु उसे बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर देती हैं। उमेश श्रीवास्तव की कलम की यह खासियत है कि वे अपने साहित्य में अपने पात्रों के सुख दुःख और अंतर्द्वंद को कुशलता से उभारते हैं और यहाँ भी वे पूर्ण सफल हुए हैं। इस कहानी संग्रह की कीमत मात्र 100 रुपए रखी गई है और यह अमेजन पर उपलब्ध है। —रंजन पाण्डेय

राजस्थानः परबतसर में भाजपा प्रत्याशी झंपर्सी बेंदक को मिला सिर्फ एक वोट

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान के नगर निकाय चुनावों में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के एक उम्मीदवार को सोमवार को अजीब स्थिति का सामना करना पड़ा जब उन्हें एक ही वोट मिला। प्रत्याशी को मिला वोट भी उनका खुद का नहीं है। यह वाकया डीडवाना–कुचामन जिले की परबतसर नगरपालिका के वार्ड संख्या–13 में सामने आया। इस वार्ड से भाजपा के उम्मीदवार कैलाशचंद को सिर्फ एक मत मिला। राज्य निर्वाचन आयोग की वेबसाइट के अनुसार कांग्रेस उम्मीदवार हिना खानम ने 376 वोट लेकर चुनाव जीता। इस वार्ड में निर्दलीय उम्मीदवार राशिद खान को 195 वोट मिले। कैलाशचंद ने 'पीटीआई–भाषा' को बताया कि वह वार्ड संख्या– 12 के मतदाता हैं लेकिन पार्टी ने उन्हें नजदीकी वार्ड संख्या–13 से उम्मीदवार बनाया था। उन्होंने कहा, मुझे एक मत मिला। मेरा मत वार्ड संख्या– 12 में है। मुझे वार्ड संख्या–13 से उम्मीदवार बनाया गया था। उस वार्ड के किसी एक व्यक्ति ने मुझे वोट दिया है। परबतसर नगरपालिका में 25 वार्ड हैं। कांग्रेस ने 13 वार्ड जीतकर बहुमत हासिल किया जबकि 12 वार्ड में भाजपा के उम्मीदवार जीते। राज्य में 309 नगर निकायों के लिए संपन्न चुनाव के लिए सोमवार को मतगणना हुई। इस दौरान इस वार्ड के चुनाव परिणाम लोगों में चर्चा का विषय बना रहा।

सागर शराब कांड का असरः टीकमगढ़ में महिलाओं ने शराब दुकान में की तोड़फोड़, 25 लाख का माल नष्ट

सागर,एजेंसी। मध्यप्रदेश के सागर में जहरीली शराब से हुयी मौत के बाद गुस्साई महिलाओं ने टीकमगढ़ जिले के एक लाइसेंसी शराब दुकान पर हमला कर दिया और करीब 25 लाख रुपये की देसी एवं भारत में निर्मित विदेशी शराब नष्ट कर दी। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। शराब विरोधी नारे लगाते हुए और शोक संतप्त परिवारों के लिए न्याय

की मांग करते हुए प्रदर्शनकारियों ने रविवार को जिले के बम्होरी गांव में एक दुकान पर धावा बोला। जिला आबकारी अधिकारी नरेश प्रताप सिंह ने बताया कि जिला मुख्यालय से करीब 35 किलोमीटर दूर जतारा उपमंडल के बम्होरी में यह घटना हुई। उन्होंने बताया कि महिलाओं के एक दल ने मां गहौली वाइन द्वारा संचालित एक दुकान को निशाना बनाया और इस दौरान 25 लाख रुपये मूल्य की देसी और भारत में निर्मित विदेशी शराब (आईएमएफएल) नष्ट कर दी। टीकमगढ़ और सागर मध्यप्रदेश के आर्थिक रूप से पिछड़े बुंदेलखंड क्षेत्र के जिलों में से हैं, जो उत्तर प्रदेश की सीमा से सटा हुआ है। आबकारी अधिकारी ने आरोप लगाया कि बम्होरी गांव के सरपंच ने शराब की दुकान के खिलाफ माहौल बनाने के लिए सागर त्रासदी का इस्तेमाल किया और अपने स्थानीय राजनीतिक प्रभाव को मजबूत करने के प्रयास में लोगों को लामबंद किया। डिगोडा पुलिस थाने के अंतर्गत बम्होरी बीट पर तैनात एक पुलिसकर्मी ने कहा कि दुकान के एक कर्मचारी ने एक आवेदन देकर अज्ञात लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की है।

सुप्रीम कोर्ट से याचिका खारिज होने के बाद 3 मुख्य आरोपियों ने किया सरेंडर

मुंबई,एजेंसी। गोवा के नाइटक्लब 'बर्च बाय रोमियो लेन' अग्निकांड के मामले में जमानत रद्द किए जाने के खिलाफ दायर याचिकाएं उच्चतम न्यायालय द्वारा खारिज किए जाने के दो सप्ताह बाद तीन मुख्य आरोपियों ने सोमवार को गोवा की एक अदालत के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। शीर्ष अदालत के निर्देश के बाद नाइटक्लब के मालिक सौरभ लूथरा और गौरव लूथरा तथा उनके कारोबारी साझेदार अजय गुप्ता ने मापुसा की अपर जिला एवं सत्र अदालत के समक्ष आत्मसमर्पण किया। उत्तरी गोवा के अरपोरा स्थित 'बर्च बाय रोमियो लेन' नाइटक्लब में छह दिसंबर 2025 को लगी भीषण आग में 25 लोगों की मौत हो गई थी और कई अन्य घायल हो गए थे।

आरोपियों की ओर से पैरवी कर रहीं अधिवक्ता सौम्या ड्रागो ने पुष्टि की कि अदालत ने उनके मुवक्किलों का आत्मसमर्पण स्वीकार कर लिया और आवश्यक हिरासत संबंधी आदेश जारी किए। मुंबई उच्च न्यायालय ने आरोपियों की जमानत रद्द कर उन्हें दो सप्ताह के भीतर आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया था। इसके विरोध में आरोपियों ने अपील की थीं।

उच्चतम न्यायालय ने आरोपियों की याचिकाओं को 31 अगस्त को खारिज कर दिया था। शीर्ष अदालत ने अधीनस्थ अदालत को मामले की सुनवाई में तेजी लाने का भी निर्देश दिया था। ड्रागो ने संवाददाताओं से कहा कि उनके मुवक्किलों के चिकित्सा संबंधी दस्तावेजों और चिकित्सकों की सलाह के आधार पर अदालत में एक आवेदन दायर कर कुछ चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया है।

उन्होंने बताया कि अदालत ने दवाओं और गद्दे से संबंधित अनुरोध स्वीकार कर लिए, लेकिन विशेष जूतों की मांग पर कोई फैसला नहीं किया और इस संबंध में जांच अधिकारी से जवाब मांगा है। उन्होंने कहा कि अदालत अगले कार्य दिवस पर इस अनुरोध पर विचार कर सकती है। मुंबई उच्च न्यायालय ने मामले की गंभीरता और कानूनी कार्यवाही की आवश्यकता का हवाला देते हुए तीनों आरोपियों को दी गई जमानत 18 अगस्त को रद्द कर दी थी।

इसके बाद तीनों ने उच्चतम न्यायालय का रुख किया था, लेकिन शीर्ष अदालत ने उच्च न्यायालय के आदेश में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया।

सादर आमंत्रण

पुस्तक विमोचन एवं सम्मान समारोह

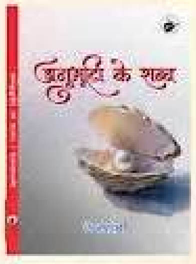

अध्यक्षता
पूर्व कमिश्नर
श्री बादल चटर्जी जी

मुख्य अतिथि
श्री तलब जौनपुरी जी

विशिष्ट अतिथि
डॉ वीरेन्द्र तिवारी जी

सम्मानित व्यक्तित्व

डॉ. यास्मीन सुल्ताना नकवी जी | साहित्य
डॉ. प्रदीप चित्रांशी जी | साहित्य
श्री उमेश श्रीवास्तव जी | साहित्य
श्रीमती चन्द्रा सक्सेना "निशी" | साहित्य
श्री राम अधार यादव जी | इंजीनियर
श्री सुशांत घोष जी | गिटार वादक

तारीख
15 सितंबर 2026
(मंगलवार)

समय
प्रात: 11:30 बजे
दिन में

स्थान
जेड गाईन
सिविल लाइंस
प्रयागराज

संचालन
ज्योतिर्मयी

आयोजक
देवयानी
ज्योतिर्मयी
इंक पब्लिकेशन, प्रयागराज

लंच के साथ समापन

वीसी प्रो. अजीत चतुर्वेदी बोले– महामना का आवास मेरे लिए तीर्थस्थल जैसा

प्रयागराज। जिस घर को महामना पंडित मदन मोहन मालवीय ने बनाया, वहां आना तीर्थस्थल जैसी अनुभूति देता है। यह बात बीएचयू, वाराणसी के कुलपति प्रो. अजीत चतुर्वेदी ने रविवार को प्रयागराज आगमन पर अमर उजाला से बातचीत में कही।

जिस घर को महामना पंडित मदन मोहन मालवीय ने बनाया, वहां आना तीर्थस्थल जैसी अनुभूति देता है। यह बात बीएचयू, वाराणसी के कुलपति प्रो. अजीत चतुर्वेदी ने रविवार को प्रयागराज आगमन पर बातचीत में कही। वह यहां जॉर्जटाउन स्थित पंडित मदन मोहन मालवीय के पौत्र व बीएचयू के चांसलर रहे स्वर्गीय गिरिधर मालवीय के आवास पर उनकी पत्नी कांता मालवीय और पुत्र व पूर्व डीजीपी मनोज मालवीय से मिलने आए थे। प्रो. चतुर्वेदी ने मनोज मालवीय से बीएचयू की गतिविधियों पर भी बातचीत की। उन्होंने कहा कि बीएचयू के संस्थापक व कुलपति रहे पंडित मदन मोहन मालवीय ने प्रयागराज और वाराणसी को बहुत कुछ दिया और दोनों ही शहरों ने भारतीय संस्कृति को परिभाषित किया है। हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर प्रो. अजीत चतुर्वेदी बोले कि महामना ने 150 पेज का नोट लिखा था जिसमें उन्होंने जोर दिया था कि विद्यार्थियों को हिंदी की पुस्तकें अधिक पढ़ाई जाएं और प्रतिष्ठित लेखकों की पुस्तकों का अनुवाद भी हिंदी में कराया जाए। प्रो. चतुर्वेदी ने कहा कि महामना बीएचयू के तीसरे कुलपति रहे और उनके कार्यकाल में पूरे विश्व से उच्च कोटि के विद्वानों को बीएचयू में नियुक्ति दी गई जिसकी वजह से संस्थान आज भी शीर्ष पर है। इस बीच प्रयागराज के वर्तमान पुलिस कमिश्नर एवं वाराणसी के पूर्व एडीजी जोन पीयूष मोर्डिया भी गिरिधर मालवीय के आवास पर पहुंचे और परिवार के साथ बैठकर कुछ पल बिताए। कमिश्नर ने कहा कि बीएचयू हो या महामना का आवास, यहां आना रोमांचित करता है। प्रयागराज से अगर कोई वाराणसी जाता है और पूछता कि वहां घूमने लायक क्या है तो सबसे पहले यही कहते हैं कि बीएचयू जरूर जाना।

प्रोफेसर गुंजन की मौत का मामलाः कमरे में बंद जिंदगी, कराह सुनने वाला कोई नहीं

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग की प्रोफेसर गुंजन सुशील की मौत ने शहर में अकेले रह रहे बुजुर्गों की जिंदगी और उनकी सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग की प्रोफेसर गुंजन सुशील की मौत ने शहर में अकेले रह रहे बुजुर्गों की जिंदगी और उनकी सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा के लिए पुलिस का सवेरा अभियान हर अकेले बुजुर्ग तक नहीं पहुंच सका है। साफ है बुजुर्गों के लिए अकेलापन मुसीबत साबित हो रहा है। अकेले रहने वालों की जिंदगी कमरे में बंद रहती है। जरूरत पर उनकी कराह सुनने वाला कोई नहीं मिलता। सवेरा अभियान की शुरुआत वर्ष 2019 में हुई थी। जिले में 600 से अधिक बुजुर्ग सवेरा पोर्टल पर पंजीकृत भी हैं। इसके बावजूद जिले में अब तक सिर्फ 67 बुजुर्गों ने अपनी समस्या साझा की। इस व्यवस्था में पुलिस को यह भी सुनिश्चित करना होता है कि पंजीकृत बुजुर्गों से संपर्क स्थापित कर समय–समय पर उनका हाल भी जानें। पुलिस के आला अफसरों के लिए पड़ताल का विषय ये भी है कि क्या प्रोफेसर गुंजन सुशील सवेरा पोर्टल पर पंजीकृत थीं। स्थानीय पुलिस ने उनका हाल जाना था? पुलिस के मुताबिक, पता चला है कि बीमार गुंजन शुक्रवार रात दवा खाकर कमरे में सोईं थीं। सुबह खाना बनाने के लिए मेड आई और आवाज लगाई। भीतर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। दरवाजा तोड़कर पुलिस अंदर पहुंची तो उनकी मौत हो चुकी थी। प्रोफेसर गुंजन सुशील के पति स्वर्गीय मनोज वर्मा सीएमएस पद पर कार्यरत थे। करीब दो वर्ष पहले बीमारी से उनका निधन हो गया था। इकलौती बेटी समृद्धि राय और दामाद हितेश राय के मुताबिक, उनकी मां गुंजन सुशील कैंट के मुन्ना हाता में घर में अकेली रहती थीं। बेटी और दामाद के अलावा उनका कोई और नहीं था। मां को खांसी, जुकाम के साथ सांस लेने में भी परेशानी थी। नौकर और खाना बनाने वाली मेड उनकी बराबर निगरानी कर रही थी। शुक्रवार की रात मेड मां को खाना और दवा खिलाकर अपने घर चली गई थी। रात में उनकी देखभाल के लिए कोई नहीं था। शहर में ऐसे कई बुजुर्ग दंपती और वरिष्ठ नागरिक अकेले रह रहे हैं, जिनके बच्चे नौकरी, कारोबार और रोजी–रोटी के सिलसिले में दूसरे शहरों में रहते हैं। कुछ परिवारों में रिश्तों की दूरी भी बुजुर्गों को अकेलेपन के हवाले कर देती है। दिन में किसी तरह समय गुजर जाता है, लेकिन रात का सन्नाटा उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती बन जाता है। कई घरों में बुजुर्गों का सहारा केवल घरेलू सहायिका, पड़ोसी या कभी–कभार फोन करने वाले रिश्तेदार होते हैं। अचानक तबीयत बिगड़ने, गिर जाने या किसी आपात स्थिति में मदद पहुंचने में देरी जानलेवा साबित हो सकती है। डीसीपी सिटी सागर जैन ने बताया कि शहर में वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा और सहायता के लिए आपात स्थिति में हेल्पलाइन नंबर 112 और 14567 नंबर उपयोगी हैं। गंभीर संकट या तत्काल पुलिस सहायता के लिए 112 पर कॉल करें। वहीं, 14567 एल्डरलाइन के माध्यम से दुर्व्यवहार, कानूनी सहायता, पेंशन संबंधी जानकारी और भावनात्मक सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। यह टोल फ्री हेल्पलाइन सुबह आठ से रात आठ बजे तक संचालित होती है। पुलिस की सवेरा योजना के तहत बुजुर्ग 112 पर पंजीकरण कराकर विशेष सुरक्षा निगरानी का लाभ भी ले सकते हैं। वरिष्ठ नागरिकों से अपील है कि वे परेशानी छिपाने के बजाय हेल्पलाइन पर संपर्क कर अपनी समस्या जरूर साझा करें।

हिंदी दिवसः 'न्याय वही, जो आमजन को समझ आए', हिंदी में 38,600 से अधिक फैसले लिख चुके हैं न्यायमूर्ति चौधरी

प्रयागराज। न्याय केवल किया जाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि जिस व्यक्ति के लिए न्याय किया जा रहा है, उसे न्यायिक निर्णय समझ में भी आना चाहिए। इसी सोच के साथ इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति डॉ. गौतम चौधरी ने हिंदी को अपने न्यायिक लेखन का महत्वपूर्ण माध्यम बनाया है। न्याय केवल किया जाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि जिस व्यक्ति के लिए न्याय किया जा रहा है, उसे न्यायिक निर्णय समझ में भी आना चाहिए। इसी सोच के साथ इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति डॉ. गौतम चौधरी ने हिंदी को अपने न्यायिक लेखन का महत्वपूर्ण माध्यम बनाया है। उनकी ओर से अब तक हिंदी में पारित निर्णयों और आदेशों की संख्या 38,600 से अधिक हो चुकी है। हिंदी दिवस के अवसर पर उनका यह प्रयास न्यायिक कार्य में हिंदी के व्यापक प्रयोग और आमजन तक न्याय को सहज बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। न्यायमूर्ति डॉ. गौतम चौधरी हिंदी को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं मानते। उनके लिए हिंदी अपनी जड़ों, संस्कृति और आमजन से जुड़ने का सहज माध्यम है। उन्होंने औपचारिक अवसरों तक हिंदी के प्रयोग को सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे अपने दैनिक न्यायिक कार्य और विधिक अभिव्यक्ति का हिस्सा बनाया है।

हिंदी की किताबों से जेन-जी की दोस्ती

प्रयागराज। सोशल मीडिया, रील्स और हिंग्लिश के दौर में पली–बढ़ी जेन–जी अब हिंदी की किताबों की ओर भी लौट रही है। शहर के पुस्तक विक्रेताओं के अनुभव बताते हैं कि दो वर्षों में हिंदी की किताबों को लेकर युवाओं की रुचि में खासा बदलाव आया है।

20 से 30 वर्ष की उम्र के युवा अब अपनी पसंद से हिंदी साहित्य की पुस्तकें तलाश रहे हैं। उनकी पसंद में नई पीढ़ी के लेखक और पुरानी चर्चित रचनाएं दोनों शामिल हैं।

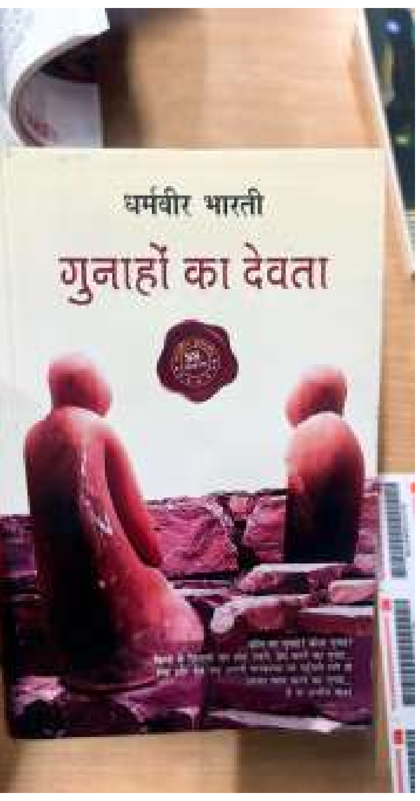

धर्मवीर भारती की 'गुनाहों का देवता', फणीश्वर नाथ रेणु की 'मैला आंचल', श्रीलाल शुक्ल की 'राग दरबारी' और ममता कालिया की 'जीते जी इलाहाबाद' जैसी किताबों के साथ दिव्य प्रकाश दुबे और मानव कौल जैसे नए दौर के लेखकों की रचना भी युवाओं को आकर्षित कर रहा है।

लेखक नीलोत्पल 'मृणाल की डार्क हॉर्स' (साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार से सम्मानित) भी युवाओं की खास पसंद में शामिल है। कटरा स्थित इंडिगो बुक शॉप के अनुराग मौर्य कहते हैं कि दो साल पहले इन किताबों को कोई पूछता ही नहीं था लेकिन अब इनकी बिक्री और मांग में बदलाव तेजी से बढ़ी है।

युवाओं के बीच खासकर दिव्य प्रकाश दुबे और मानव कौल पढ़े जा रहे हैं। वहीं 'गुनाहों का देवता' की मांग भी पिछले दो सालों तेजी से बढ़ी है। विदेश से अब इसके अंग्रेजी संस्करण भी आ रही है। यह बदलाव बताता है कि हिंदी साहित्य को लेकर पाठकों की दिलचस्पी खत्म नहीं हुई, बल्कि उसका दायरा बढ़ रहा है।

'मुसाफिर कैफे' का अंग्रेजी संस्करण भी दुनियाभर में लोकप्रिय हो रहा है। अंग्रेजी और हिंदी की किताबों की जेन जी की पसंद में 60रु40 का अनुपात देखने को मिलता है लेकिन जेन जी अब हिंदी की किताबों से भी दोस्ती करते नजर आ रही है। संवाद

साहित्य भी बनी पहली पसंद

वाणी प्रकाशन के मैनेजर योगेंद्र यादव के अनुसार 20 से 30 वर्ष की उम्र के युवा हिंदी की किताबें अधिक खरीद रहे हैं। उनकी पसंद में 'गुनाहों का देवता', 'मुझे चांद चाहिए', 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' और 'कसाईबाड़ा' जैसी किताबें शामिल हैं। हिंदी की किताबों के लिए युवाओं में रुचि बढ़ रही है। लोकभारती प्रकाशन के संरक्षक रमेश ग्रोवर के अनुसार युवा 'रेत की मछली', 'जीते जी इलाहाबाद', 'विकल्पहीन है दुनिया', 'मैला आंचल' और 'राग दरबारी' जैसी किताबों को खूब पसंद कर रहे हैं।

बोलचाल की भाषा से जुड़ रहे युवा

कटरा स्थित सबद की संचालिका सुनीता के अनुसार, दिव्य प्रकाश दुबे ऐसी हिंदी में लिख रहे हैं जो युवाओं की रोजमर्रा की बातचीत के करीब है। चेतन भगत और मानव कौल भी युवाओं में पढ़े जा रहे हैं। बोलचाल के शब्द, छोटे वाक्य और रोजमर्रा के अनुभवों से जुड़ी कहानियां युवाओं को कठिन और किताबी भाषा की तुलना में अधिक सहज लगती हैं।

आजाद रीड्स ग्रुप में 3,500 से अधिक सदस्य हैं। इनमें करीब 2,000 युवा हिंदी किताबों में रुचि रखते हैं। युवाओं में हिंदी के प्रति नया झुकाव नहीं, बल्कि मातृभाषा से आत्मीय जुड़ाव बढ़ा है। युवाओं को ऐसी भाषा और किरदार अधिक पसंद हैं, जिनसे वे अपने आज के जीवन को जोड़ पाते हैं। – राघव मिमानी, संस्थापक, आजाद रीड्स

मुझे 'शेखर रू एक जीवनी' सबसे अधिक पसंद आई। किताबें दिमाग की खिड़कियां खोलती हैं और नए विचारों से परिचय कराती हैं। हिंदी युग्म की ओर से प्रकाशित किताबों में भी सरल भाषा और छोटे आकार पर जोर दिया जा रहा है। – प्रभात सिंह, राजापुर

स्कूल की लाइब्रेरी से प्रेमचंद को पढ़ना शुरू किया था। इसके बाद जयशंकर प्रसाद और हजारी प्रसाद द्विवेदी से होते हुए हिंदी कविता से परिचय हुआ। मानव कौल और दिव्य प्रकाश दुबे की किताबें भी पढ़ना पसंद है। – अक्षत सिंह

हिंदी साहित्य के प्रति मेरा रुझान पिताजी से आया है। मुझे विशेष रूप से शुद्ध हिंदी और संस्कृतनिष्ठ भाषा में लिखी कहानियां व साहित्य पढ़ना पसंद है। प्रेमचंद, दिनकर और निराला जैसे साहित्यकार पसंद हैं। नई हिंदी साहित्य को ज्यादा नहीं पढ़ा है लेकिन उसे भी आगे पढ़ने और समझने की इच्छा है। – तान्या मिश्रा, मम्फोर्डगंज

हिंदी अनुवादित पुस्तकों की बढ़ी मांग

अंग्रेजी की चर्चित किताबों के हिंदी अनुवाद भी युवाओं के बीच जगह बना रहे हैं। इनमें 'हू मूव्ड माई चीज?', 'द लिटिल प्रिंस', 'द अलकेमिस्ट', 'द ओल्ड मैन एंड द सी' और 'ट्यूजडेज विद मॉरी' युवाओं की खास पसंद में हैं। इसके साथ 'जोनाथन लिविंग्सटन सीगल', 'एनिमल फार्म', 'द फाइव पीपल यू मीट इन हेवन', 'द मोंक हू सोल्ड हिज फेरारी' और 'द रिचेस्ट मैन इन बेबिलोन' के हिंदी रूपांतरण भी पसंद आ रहे हैं।

छठ पर्व पर बिहार जाने वाली ट्रेनें दो माह पहले ही फुल, एसी थ्री और स्लीपर में लंबी वेटिंग

प्रयागराज। इस बार 13 से 16 नवंबर तक मनाए जाने वाले छठ महापर्व के लिए प्रयागराज से बिहार जाने वाली ट्रेनों में दो महीने पहले ही 'नो रूम' के हालात बन गए हैं।

इस बार 13 से 16 नवंबर तक मनाए जाने वाले छठ महापर्व के लिए प्रयागराज से बिहार जाने वाली ट्रेनों में दो महीने पहले ही 'नो रूम' के हालात बन गए हैं। समस्तीपुर, भागलपुर, कटिहार, पटना, गया, जोगबनी, मुजफ्फरपुर, मोतिहारी, सहरसा, पूर्णिया, लखीसराय, सीतामढ़ी, दरभंगा, मधुबनी, मुंगेर, किशनगंज, सासाराम और गोपालगंज जाने वाली लगभग सभी गाड़ियों में सीटें भर चुकी हैं।

रामबाग से पटना होकर हावड़ा जाने वाली विभूति एक्सप्रेस में 10 से 12 नवंबर के लिए एसी थ्री और एसी टू में नो रूम हो गया है। महानंदा एक्सप्रेस के एसी–टू में जगह नहीं बची है जबकि एसी–थ्री और स्लीपर क्लास में लंबी प्रतीक्षा सूची पहुंच गई है।

जंक्शन और छिवकी से होकर बिहार के शहरों को जोड़ने वाली 19483 अहमदाबाद–सहरसा, 12562 नई दिल्ली–जयनगर, 11033 पुणे–दरभंगा, 11061 लोकमान्य तिलक–जयनगर, 15232 गोंडिया–बरौनी, 12302 नई दिल्ली–हावड़ा राजधानी, 22824 भुवनेश्वर राजधानी, 12816 नंदन कानन, 12802 पुरुषोत्तम एक्सप्रेस, 12324 बाड़मेर–हावड़ा, 12988 अजमेर–सियालदाह, 12398 नई दिल्ली–गया, 12322 मुंबई–हावड़ा मेल, 12495 प्रताप एक्सप्रेस, 12506 नॉर्थ ईस्ट और 22406 भागलपुर–गरीबरथ में दिवाली के बाद किसी भी तिथि में रिजर्वेशन कंफर्म नहीं मिल रहा है।

अब तत्काल के साथ सिर्फ स्पेशल ट्रेनों का ही सहारा

कंफर्म टिकट के लिए जूझ रहे यात्रियों में शामिल मुट्ठीगंज निवासी राहुल कुमार बताते हैं कि उन्हें परिवार के साथ पटना जाना है लेकिन अभी से ट्रेनों में लंबी वेटिंग देखकर चिंता बढ़ गई है। अब स्पेशल ट्रेनों का ही एकमात्र सहारा नजर आ रहा है। वहीं, दारागंज निवासी राजेंद्र मिश्रा कहते हैं कि दरभंगा जाने के लिए कई ट्रेनों में सीट तलाशने की कोशिश की लेकिन हर जगह नो रूम या भारी प्रतीक्षा सूची मिलने के कारण अब उन्हें तत्काल टिकट या स्पेशल ट्रेनों के भरोसे ही रहना पड़ेगा।

पर्व के मौके पर आवश्यकतानुसार स्पेशल ट्रेनें चलाई जाती हैं। इस बार भी स्पेशल ट्रेनें चलाने की तैयारी है। कुछ स्पेशल के फेरे बढ़ाए भी गए हैं। – डॉ. अमित मालवीय, सीनियर पीआरओ, एनसीआर

मेडिकल बोर्ड के दिव्यांगता प्रतिशत कम आकलन पर आरक्षण नहीं छीन सकते

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि मेडिकल बोर्ड की ओर से दिव्यांगता का प्रतिशत कम आकलन करने के आधार पर अभ्यर्थी को आरक्षण के लाभ से वंचित नहीं किया जा सकता, जब सक्षम प्राधिकारी की ओर से जारी दिव्यांगता प्रमाणपत्र कायम है।

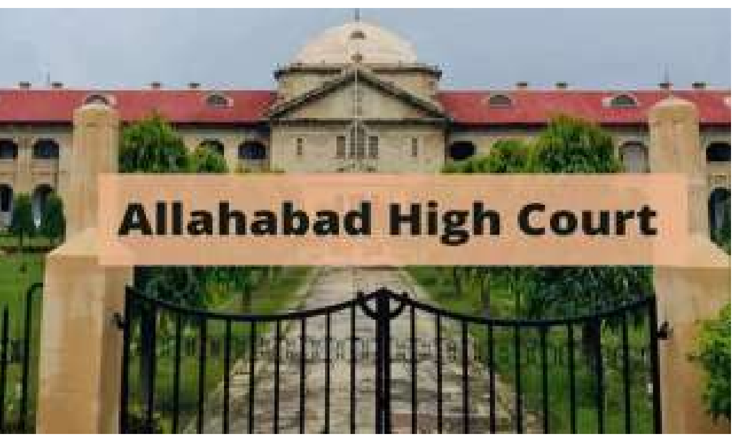

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि मेडिकल बोर्ड की ओर से दिव्यांगता का प्रतिशत कम आकलन करने के आधार पर अभ्यर्थी को आरक्षण के लाभ से वंचित नहीं किया जा सकता, जब सक्षम प्राधिकारी की ओर से जारी दिव्यांगता प्रमाणपत्र कायम है। कोर्ट ने नीट–यूजी 2026 के एक अभ्यर्थी को उसके दिव्यांगता प्रमाणपत्र के आधार पर आरक्षण श्रेणी में सीट के लिए दावा करने की अनुमति दी है। यह आदेश न्यायमूर्ति अरिंदम सिन्हा और न्यायमूर्ति सत्यवीर सिंह की खंडपीठ ने महाराजगंज निवासी आलोक कुमार गुप्ता की याचिका पर दिया।

याची के पास 30 जून 2025 को जारी स्थायी दिव्यांगता प्रमाणपत्र था। इसमें उसे मानसिक बीमारी के कारण 55 प्रतिशत दिव्यांगता बताया गया था। उसने नीट–यूजी 2026 की परीक्षा दी थी। आरक्षण का लाभ लेने के लिए उसे मेडिकल बोर्ड से पात्रता प्रमाणपत्र प्राप्त करना था। मेडिकल बोर्ड ने 12 अगस्त 2026 को जारी प्रमाणपत्र में याची को पढ़ाई के लिए सक्षम माना लेकिन दिव्यांगता 40 प्रतिशत से कम आंकी। याची ने इसे हाईकोर्ट में चुनौती दी।

याची के अधिवक्ता ने दलील दी कि दिव्यांगता प्रमाणपत्र जारी करने वाली सक्षम संस्था के प्रमाणपत्र को चुनौती नहीं दी गई है। लिहाजा बाद में मेडिकल बोर्ड की ओर से दिव्यांगता प्रतिशत कम किए जाने के आधार पर उसे दिव्यांग श्रेणी के आरक्षण से वंचित नहीं किया जा सकता। कोर्ट ने पक्षों को सुनने के बाद कहा कि दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम–2016 में दिव्यांगता प्रमाणपत्र जारी करने और उसके खिलाफ अपील की व्यवस्था है।

कोर्ट ने पाया कि कई मामलों में मेडिकल बोर्ड ने अभ्यर्थियों को पढ़ाई के लिए सक्षम माना लेकिन उनकी दिव्यांगता को 40 प्रतिशत के बेंचमार्क से काफी कम बताया। खंडपीठ ने कहा कि इन मामलों में सक्षम प्राधिकारी की ओर से जारी दिव्यांगता प्रमाणपत्रों को चुनौती नहीं दी गई है। हाईकोर्ट ने याची को उसके मूल मेडिकल प्रमाणपत्र के आधार पर आरक्षण श्रेणी में सीट के लिए दावा करने की अनुमति दी।

अनुभव की अनदेखी स्वीकार्य नहीं, विशेष टीईटी में मिले मौका : शिव कुमार शुक्ला

प्रयागराज। प्राथमिक शिक्षा मित्र संघ ने विशेष टीईटी के शासनादेश में शिक्षामित्रों को शामिल नहीं किए जाने के विरोध में आंदोलन की चेतावनी दी है। रविवार को चंद्रशेखर आजाद पार्क में हुई संघ की बैठक में प्रदेशभर के शिक्षामित्रों की समस्याओं पर चर्चा हुई। प्रदेश अध्यक्ष शिव कुमार शुक्ला ने कहा कि शिक्षामित्र कोई नए अभ्यर्थी नहीं हैं बल्कि वर्षों से परिषदीय विद्यालयों में बच्चों को पढ़ाने की जिम्मेदारी निभा रहे हैं। उनकी योग्यता, सेवाकाल और अनुभव की अनदेखी स्वीकार नहीं की जाएगी। सरकार को शासनादेश में संशोधन कर शिक्षामित्रों को विशेष टीईटी में शामिल करना चाहिए। साथ ही टीईटी उत्तीर्ण शिक्षामित्रों के अनुभव को आधार बनाकर सुपर टीईटी में उचित छूट का प्रावधान करते हुए नियमितीकरण की दिशा में ठोस निर्णय लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि संगठन सरकार से टकराव नहीं बल्कि संवाद के जरिये स्थायी समाधान चाहता है।

प्रदेश उपाध्यक्ष अजय सिंह ने कहा कि मानदेय वृद्धि व चिकित्सा सुविधा जैसे मामलों में संगठन के प्रयासों के सकारात्मक परिणाम मिले हैं। अब विशेष टीईटी और नियमितीकरण शिक्षामित्रों के भविष्य से जुड़ा सबसे अहम मुद्दा है। वहीं प्रदेश उपाध्यक्ष व प्रयागराज जिलाध्यक्ष वसीम अहमद ने कहा कि वर्षों तक परिषदीय विद्यालयों में सेवा देने वाले शिक्षामित्रों को विशेष टीईटी से अलग रखना न्यायसंगत नहीं है। सरकार को उनके अनुभव को महत्व देते हुए स्पष्ट नियमितीकरण नीति बनानी चाहिए।

बैठक में कौशाम्बी जिलाध्यक्ष रत्नाकर सिंह, जनार्दन तिवारी, विनय पटेल, संतोष बाबू पाल, घनश्याम दत्त मिश्रा, जगदीश केसरी, प्रताप बहादुर सिंह, अमर बहादुर सिंह, वंदना श्रीवास्तव, नीलम गौतम, आयशा खान आदि मौजूद रहीं।

जख्म खाए हैं मगर लब पे शिकायत न रही...

प्रयागराज। बज्म–ए–अहबाब संस्था के संस्थापक शाकिर हुसैन तशना कानपुरी की स्मृति में करेली स्थित अदब घर में रविवार को कवि सम्मेलन व मुशायरा हुआ। मुख्य अतिथि सिविल डिफेंस के डिविजनल ऑफिसर रौनक गुप्ता रहे। बज्म–ए–अहबाब के संस्थापक सदस्य शाकिर हुसैन तशना के पुत्र व संस्था के वर्तमान अध्यक्ष अमजद हुसैन रावी ने अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने कलाम जख्म खाए हैं मगर लब पे शिकायत न रही से महफिल लूट ली। इस दौरान पांच लोगों को 'तशना कानपुरी सम्मान' से नवाजा गया। मुशायरे में शायर असलम इलाहाबादी, फरमूद इलाहाबादी, वाकिफ अंसारी, डॉ. कमर आब्दी, डॉ. मोहम्मद शाहिद खान, सुनील दानिश, डॉ. राहुल शुक्ला, राम लखन चौरसिया समेत अन्य लोगों ने कलाम और कविताएं पेश कीं। इस मौके पर आसिफ उस्मानी, शहाब हनफी, मोईन हबीबी, असद कुरैशी, सैय्यद मोहम्मद अस्करी, असद हुसैनी ताबी, महमूद खान मौजूद रहे।

इविवि में बिहार के छात्रों का दबदबा, 27 राज्यों से पहुंचे विद्यार्थी

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इविवि) में पढ़ाई के लिए उत्तर प्रदेश के साथ ही दूसरे राज्यों के विद्यार्थियों का रुझान लगातार बना हुआ है। इस सत्र में विश्वविद्यालय के स्नातक (यूजी) और परास्नातक (पीजी) पाठ्यक्रमों में 27 राज्यों के विद्यार्थियों ने दाखिला लिया है। दूसरे राज्यों से आने वाले विद्यार्थियों में बिहार के छात्रों की संख्या सबसे अधिक है। इसके बाद मध्य प्रदेश और झारखंड का स्थान है।

यूजी की करीब 3700 सीटों पर दाखिला लेने वाले विद्यार्थियों में 900 से अधिक उत्तर प्रदेश के बाहर के राज्यों से हैं। इसमें बिहार के 374 विद्यार्थी शामिल हैं। मध्य प्रदेश के 182, झारखंड के 99, छत्तीसगढ़ के 49 और राजस्थान के 44 विद्यार्थियों ने भी इविवि में प्रवेश लिया है। इसके अलावा पश्चिम बंगाल, ओडिशा, हरियाणा, असम, उत्तराखंड, दिल्ली, गुजरात, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, पंजाब समेत कई राज्यों के विद्यार्थी भी विश्वविद्यालय में पढ़ रहे हैं। परास्नातक पाठ्यक्रमों में भी बिहार के विद्यार्थियों की संख्या सबसे ज्यादा है। पीजी में बिहार के 106 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। मध्य प्रदेश के 42, झारखंड के 20 और दिल्ली के 15 विद्यार्थियों ने दाखिला लिया है। इससे स्पष्ट है कि इविवि की ओर दूसरे राज्यों के विद्यार्थियों का रुझान केवल स्नातक स्तर तक सीमित नहीं है बल्कि पीजी पाठ्यक्रमों में भी बना हुआ है।

संक्षिप्त

पारा में अवैध भैंस डेयरियों पर नगर निगम की कार्रवाई,30 भैंसें पकड़ी

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी के पारा थाना क्षेत्र की पारा सागर विहार कॉलोनी में सोमवार को नगर निगम की टीम ने अवैध भैंस डेयरियों के खिलाफ अभियान चलाया। कार्रवाई पांच बंदर मंदिर के पास हुई। पुलिस बल की मौजूदगी में कार्रवाई से डेयरी संचालकों में खलबली मच गई। टीम ने करीब 30 भैंसों को पकड़ा और कांजी हाउस भेज दिया। नगर निगम की टीम पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंची। टीम ने क्षेत्र में चल रही डेयरियों का निरीक्षण किया। इस दौरान डेयरियों में मौजूद भैंसों को पकड़ा गया। सभी पशुओं को नगर निगम के कांजी हाउस भेज दिया गया। कार्रवाई के दौरान काफी देर तक मौके पर गहमागहमी रही। स्थानीय लोगों के अनुसार, पारा सागर विहार कॉलोनी और आसपास के रिहायशी इलाकों में लंबे समय से कई जगह भैंस डेयरियां चल रही हैं। लोगों का आरोप है कि डेयरियों से निकलने वाले गोबर और गंदगी से सफाई व्यवस्था प्रभावित हो रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि कई जगह गोबर नालियों में बहा दिया जाता है। इससे पानी की निकासी प्रभावित होती है। इसके अलावादुर्गंध के कारण आसपास रहने वाले लोगों को परेशानी होती है। नगर निगम की कार्रवाई की जानकारी मिलते ही आसपास के अन्य डेयरी संचालकों में भी खलबली मच गई। टीम ने मौके पर अवैध रूप से चल रही डेयरियों के खिलाफ जरूरी कार्रवाई की। पुलिस की मौजूदगी में अभियान शांतिपूर्ण तरीके से पूरा हुआ। स्थानीय लोगों ने नगर निगम की कार्रवाई का स्वागत किया। उन्होंने मांग की कि अवैध डेयरियों के खिलाफ लगातार अभियान चलाया जाए। लोगों का कहना है कि एक दिन की कार्रवाई से समस्या का स्थायी समाधान नहीं होगा। रिहायशी इलाकों में नियमों के खिलाफ चल रही डेयरियों पर नियमित कार्रवाई से गंदगी, दुर्गंध और जल निकासी जैसी समस्याओं से लोगों को राहत मिल सकती है।

न्याय नहीं मिलने से नाराज युवक पानी की टंकी पर चढ़ा, पुलिस ने समझाकर उतारा

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी के पारा थाना क्षेत्र की नई काशीराम कॉलोनी में सोमवार दोपहर हड़कंप मच गया। यहां एक युवक पानी की टंकी पर चढ़ गया। युवक के टंकी पर चढ़ने की खबर मिलते ही आसपास के लोग जमा हो गए परिजन और पुलिस उसे काफी देर तक समझाकर नीचे उतारने की कोशिश करते रहे। बाद में पुलिस ने युवक को समझा–बुझाकर सुरक्षित नीचे उतार लिया। युवक के टंकी पर चढ़ने की खबर मिलते ही उसकी पत्नी मौके पर पहुंची और काफी देर तक उसे नीचे उतरने के लिए समझाती रही। स्थानीय लोगों ने भी युवक से नीचे आने की अपील की। खबर मिलने पर 112 पुलिस भी मौके पर पहुंची और युवक को समझाने की कोशिश की। काफी कोशिशों के बाद पुलिस उसे सुरक्षित नीचे उतारने में कामयाब रही। जानकारी के मुताबिक, नई काशीराम कॉलोनी के रहने वाले विनोद सोनकर का बीती रात अजीज अंसारी से किसी बात को लेकर विवाद हो गया था। दोनों पक्षों के बीच कहासुनी हुई और मामला बढ़ गया। युवक की पत्नी ने बताया कि विवाद के बाद उसे न्याय नहीं मिला, जिससे वह नाराज था। इसी बात से परेशान होकर विनोद सोमवार दोपहर करीब 12 बजे काशीराम कॉलोनी की पानी की टंकी पर चढ़ गया। पुलिस ने बताया कि दोनों पक्षों के बीच हुए विवाद के मामले में कार्रवाई की जा रही है। हंसखेड़ा चौकी प्रभारी मुन्नालाल ने बताया कि दोनों पक्षों में विवाद हुआ था। इस मामले में शांति भंग की कार्रवाई की जा रही है। पुलिस ने युवक को समझाकर पानी की टंकी से नीचे उतार लिया है। इस घटना के बाद कुछ देर तक कॉलोनी में हड़कंप का माहौल रहा।

किराना स्टोर में लगी भीषण आग,टला बड़ा हादसा

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी के चौक इलाके की बान वाली गली में रविवार देर रात करीब 2 बजे अग्रवाल किराना स्टोर में भीषण आग लग गई। आग इतनी विकराल थी कि पूरी गली धुएं से भर गई। सूचना पर पहुंची दमकल की टीम को संकरी गली के कारण फायर टेंडर बाहर ही खड़ा करना पड़ा। करीब एक घंटे की मशक्कत के बाद आग पर पूरी तरह काबू पाया जा सका। हादसे के समय दुकान बंद होने के कारण कोई जनहानि नहीं हुई। पुलिस के मुताबिक फायर स्टेशन चौक कंट्रोल रूम को रात करीब 11.38 बजे सूचना मिली कि बान वाली गली स्थित अग्रवाल किराना स्टोर में आग लगी है। सूचना पर एफएसएसओ चौक दो दमकल वाहनों के साथ मौके पर पहुंचे। दुकान के ग्राउंड फ्लोर में आग विकराल रूप ले चुकी थी। गली में धुआं भरा होने के कारण अंदर पहुंचना भी मुश्किल था। बान वाली गली बेहद संकरी होने के कारण फायर टेंडर अंदर नहीं जा सका। दमकल कर्मियों ने गली के बाहर गाड़ी खड़ी कर होज पाइप अंदर तक बिछाया और पानी की पंपिंग शुरू की। आग की गंभीरता को देखते हुए तीसरी दमकल गाड़ी भी मौके पर बुला ली गई। करीब एक घंटे की मशक्कत के बाद आग पूरी तरह बुझा दी गई। पुलिस के अनुसार दुकान चौक की बान वाली गली निवासी आकाश अग्रवाल की है। आग लगने के समय दुकान बंद थी, जिससे कोई व्यक्ति अंदर नहीं फंसा और जनहानि नहीं हुई। हालांकि दुकान में रखा अधिकांश सामान जल गया। समय रहते आग पर काबू नहीं पाया जाता तो आसपास की दुकानों तक भी आग फैलने का खतरा था। पुलिस के मुताबिक प्रथम दृष्टया आग शॉर्ट सर्किट से लगने की आशंका है। हालांकि आग का वास्तविक कारण जांच के बाद ही स्पष्ट होगा। दुकान में हुए नुकसान का आकलन कराया जा रहा है।

जयकारों के बीच हुआ महा गणपति पूजन

लखनऊ, संवाददाता। गोमती नगर के विभूति खंड में क्रोमा एसीसी सीमेंट और अंबुजा सीमेंट की ओर से दिव्य एवं भव्य गणेश उत्सव पूजन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में श्रद्धालुओं और वरिष्ठजनों ने उत्साह के साथ भाग लिया। पूजा–अर्चना के दौरान भगवान गणेश का विधि–विधान से पूजन किया गया। कार्यक्रम में महा गणपति की पूजा–अर्चना कर सुख–समृद्धि और शांति की कामना की गई। पूजन के दौरान श्रद्धालुओं ने भगवान गणेश के जयकारे लगाए। 'जय गणेश' के जयघोष से पूरा परिसर भक्तिमय हो गया। आयोजन में कुमार आकाश समेत वरिष्ठ जनों ने शामिल होकर भगवान गणेश की पूजा की। श्रद्धालुओं ने विधि–विधान से पूजन कर भगवान गणेश का आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम के दौरान लोगों में खासा उत्साह देखने को मिला। आयोजकों ने कहा कि धार्मिक आयोजनों से आपसी सद्भाव और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। गणेश उत्सव के दौरान पूरे परिसर में भक्तिमय माहौल बना रहा।

प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय, प्रयागराज हिन्दी विभाग द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी पखवाड़ा महोत्सव का आयोजन

प्रयागराज। प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय, प्रयागराज के हिन्दी विभाग में आज हिन्दी दिवस बड़े उत्साह एवं गरिमा के साथ मनाया गया। इसी के साथ हिन्दी पखवाड़े की शुरुआत हो गयी। कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रो. आशुतोष कुमार सिंह ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित प्रो. प्रो राकेश सिंह ने अपने विचार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में प्रो राकेश सिंह सर का स्वागत विभागाध्यक्ष प्रो आशुतोष कुमार सिंह ने पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। राजकुमार गुप्त का स्वागत अलका मिश्रा ने किया।

स्वागत वक्तव्य देते हुए विभागाध्यक्ष आशुतोष कुमार सिंह ने हिंदी की उपयोगिता, गतिविधियों का उल्लेख किया। अपने राकेश सिंह सर के परिचय का उल्लेख करते हुए, उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। पखवाड़ा की जरूरत का उल्लेख किया। 15 दिन तक चलने वाले पखवाड़े का उल्लेख किया, जिसमें कई प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा।

मुख्य कुलानुशासक प्रो राजकुमार गुप्त ने हिंदी दिवस की शुभकामना दी। निश्चित रूप से आज विशेष दिन है मेरे और इस हिंदी समाज के लिए। प्रो राकेश सिंह द्वारा पूर्वांचल विश्वविद्यालय में किए गए महत्वपूर्ण कार्य का उल्लेख किया। भारतेंदु द्वारा किए गए हिंदी उत्थान के लिए कार्य का जिक्र किया। इतिहास विषय को हिंदी से जोड़कर भारत भूमि में उसके योगदान पर वर्णन किया। हिंदी की अभिव्यक्ति, रोजगारपरकता की बात कही। कोई भी भाषा रोजगारपरक बनाने से उसकी व्यापकता बढ़ती है। राष्ट्र को जोड़ने का कार्य भाषा करती है, यह हिंदी से ही संभव है। भारत के बंटवारे और उसके बाद पाकिस्तान के बंटवारे के लिए मुख्य रूप से भाषा जिम्मेदार है। हिंदी को वह दर्जा

मिलना चाहिए जिसकी जरूरत है। मुख्य वक्ता प्रो राकेश सिंह ने हिंदी दिवस की बधाई देते हुए सभी का अभिवादन किया। मैं 2008 से भाषा विज्ञान पढ़ा रहा हूं। मैं लैंग्वेज स्ट्रक्चर पर काम कर करा हूं। सबसे पहले भाषा आती है। भाषा सिर्फ भावना और विचार को व्यय करने की माध्यम नहीं है, भाषा उसके मूल्यों, सामाजिक असमानताओं को भी निर्मित करती है, सामाजिक निर्माण में भाषा एक उपकरण है। भाषा ज्ञान पर अधिकार पर सत्ता है। भाषा सामाजिक चेतना को सम्भव करती है। स्त्री पुरुष का निर्माण भाषा करती है। समाज में उपयुक्त भाषा से लींग का पता चलता है। भाषा मनुष्य के द्वारा बनाई गई है। बिना भाषा के कोई मनुष्य सोच भी नहीं सकता है। भाषा हमारी चेतना का बाहरी माध्यम नहीं है, हमारे अवचेतन का सबसे ज्यादा हिस्सा भाषा बनी है। ग्रामीण और एलीट क्लास में व्याप्त द्वंद को बताया। आजादी के समय गांधी और अन्य आंदोलनकारियों ने हिंदी को सपोर्ट किए। बहुसंख्यक समाज की भाषा हिंदी रही है। सत्ता बदलने पर दूसरी भाषा को प्रतिरोध की भाषा बना ली जाती है। अमेरिका की मुख्य भाषा खत्म हो चुकी है। भारत में लोक बोलियों की मुख्य भूमिका थी। भाषा की जानकारी रखना उसका स्थाई तत्व नहीं है। भाषा कम जानने वाले को कम नहीं आंका नहीं जा सकता है। भाषा के माध्यम से सबसे ज्यादा छल किया जा सकता है। भाषा विभेदीकरण करती है। मानवीय भाषा व्यक्ति को बांध देती है इसलिए कवि भाषा को स्वीकार नहीं करती है। भाषा के माध्यम से ही बहुत कुछ तय होता है। आज की दुनिया ज्ञान तंत्र के नियंत्रण में है , ज्ञान भाषा से चलता है। भाषा मनुष्य के अनुभव को आंशिक रूप में व्यक्त कर पाती है। हमारे इमोशंस को भाषा बांधती है। भाषा परिमाण का बोध करा नहीं सकती है।

शब्द और वस्तु का संबंध स्वाभाविक स्वीकृत पर आधारित है। एक ही शब्द अलग अलग अर्थ रखता है। शब्द कोश सामान्य अर्थ देता है, समाज अलग अलग अर्थ देता है।

भाषा से अर्थ तय होता है। भाषा सत्य को छिपा भी सकती है व्यक्त भी कर सकती है। माध्यम बदलने पर भाषा का अर्थ बदलता है जबकि बात एक ही बात होती है। भाषा के सीमाओं को समझा उसको कमजोर नहीं बनाता है।

भाषा के माध्यम से ही जेंडर शब्द आया , पुरुष और स्त्री की भाषा अलग अलग होता है। स्त्री की वाणी देह भाषा से जुड़कर बात करती है। स्त्री की क्रिया उसकी अभिव्यक्ति संप्रेषण को व्यक्त करती है। प्रतिरोध न होना केवल सहमति नहीं होती। विनम्रता को सहमति समझ लेना भ्रम है। प्रत्यक्षता और अप्रत्यक्षता को भाषा से ही समझ सकते हैं।

विनम्रता स्त्री का स्थाई गुण नहीं है। भाषा का सवाल ईश्वर से जुड़ता है। ईश्वर के अस्तित्व को सिर्फ मनुष्य स्वीकार करते है और वह भी जिनके पास भाषा है। ईश्वर ने मनुष्य को बनाया तो ईश्वर के अस्तित्व मानने वाली भाषा को बनाया है।

भाषा मनुष्य के भीतर भाषा चेतना होती है।

भाषा को मजबूत बनाने के लिए अन्य भाषाओं को भी मजबूत करना होगा। धन्यवाद ज्ञापन अतिथि प्रवक्ता डॉ बबलू यादव ने प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी सोनल सिंह ने किया।

विद्यार्थी विकास ही समाज की वास्तविक प्रगति: डॉ. जगदीश पाठक

प्राथमिक विद्यालय बलरामपुर में हुआ स्टेशनरी का वितरण

बलदेव। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का साधन नहीं, अपितु समाज के समावेशी और

सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। इसी पुनीत भावना को साकार करते हुए श्मणिमाणिक फाउंडेशनश वडोदरा एवं श्माखन चाखन चेरिटेबल ट्रस्टश गोकुल के संयुक्त तत्त्वावधान में प्राथमिक विद्यालय बलरामपुर में एक गरिमामयी एवं संवेदनापूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के समस्त छात्र–छात्राओं को उनकी शैक्षणिक आवश्यकताओं के अनुरूप स्टेशनरी का वितरण किया गया, जिसे पाकर विद्यार्थियों के मुख पर निश्छल मुस्कान तैर उठी।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि एवं माखन चाखन चेरिटेबल ट्रस्ट की संचालिका प्रवीना तिवारी ने अपने संबोधन में कहा कि समाज के वंचित और जरूरतमंद बच्चों को शिक्षा के मुख्य प्रवाह से जोड़ना एवं उनकी अध्ययन यात्रा को सुगम बनाना हमारा नैतिक दायित्व है। संस्था द्वारा समाज कल्याण का यह अनुष्ठान विगत लंबे समय से निरंतर संचालित किया जा रहा है। ट्रस्ट का ध्येय छात्रों को केवल साधन उपलब्ध कराना नहीं, अपितु उनके सपनों को संबल प्रदान करना है।ै

विद्यालय के प्रधानाध्यापक डॉ. जगदीश पाठक ने आयोजक संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए, उनके इस प्रयास की सराहना की। उन्होंने कहा कि मणिमाणिक फाउंडेशन एवं माखन चाखन चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा किया गया यह पावन कार्य अत्यंत सराहनीय एवं अनुकरणीय है। समाज के विभिन्न वर्गों से आने वाले जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए यह स्टेशनरी सामग्री उनके दैनिक पठन–पाठन में बेहद उपयोगी सिद्ध होगी। इस प्रकार के सहयोग से बालकों में शिक्षा के प्रति उत्साह का संचार होगा।

इस अवसर पर प्रवीना तिवारी, राहुल चौहान, ठाकुर सूर्यप्रताप सिंह, रामू शर्मा, पूरन सिंह एवं गोकुलेश पुजारी, ममता रानी, गीता सक्सेना, प्रेम चंद्र, डॉ जगदीश पाठक सहित अनेक गणमान्य प्रबुद्धजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समापन पर अतिथियों ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें निष्ठापूर्वक अध्ययन करने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रप्रेम और शिक्षा के प्रसार के संकल्प के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

घर में घुसे युवक ने तीसरी मंजिल से लगाई छलांग, मौत

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी के राजाजीपुरम में सोमवार सुबह एक युवक अचानक एक मकान में घुस गया। लोगों के देख लेने पर वह छत के रास्ते दूसरे मकान की छत पर पहुंच गया। आसपास के लोगों ने उसे रोकने और समझाने का प्रयास किया, लेकिन युवक रेलिंग पर खड़ा होकर नीचे कूद गया। गंभीर हालत में उसे रानी लक्ष्मीबाई अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। मृतक की पहचान सेक्टर–6 सपना कॉलोनी राजाजीपुरम तालकटोरा निवासी मनीष कुमार श्रीवास्तव (31) पुत्र इन्द्रजीत बहादुर श्रीवास्तव के रूप में हुई है। परिजनों ने पुलिस को बताया कि मनीष सोमवार सुबह करीब 6 बजे घर से निकला था। परिवार के अनुसार उसकी मानसिक स्थिति कुछ समय से ठीक नहीं चल रही थी। स्थानीय लोगों के अनुसार युवक मकान संख्या ई–1287 के गेट से घर में दाखिल हुआ और छत के रास्ते मकान संख्या ई–1291 की छत पर पहुंच गया। लोगों की नजर पड़ने पर शोर मचा तो वह ई–1291 की रेलिंग पर जाकर खड़ा हो गया। मौके पर मौजूद लोगों ने उसे नीचे न कूदने के लिए काफी देर तक समझाया, लेकिन वह नहीं माना और रेलिंग से नीचे छलांग लगा दी।

जागरण त्योहारों का

(छप्पय)

शुभ की होगी सुबह शाम प्यारी होगी।
कट जाएगी रात नहीं दुश्वारी होगी।
बंधन में है प्रेम अर्थ समझा है जिसने।
खुशियों का संसार बचाया है बस उसने।
मोक्ष और वैराग्य के चक्कर से अति दूर हो।
दिल में गोपी–भाव रख सबको कहें हुजूर हो।।

वसुधा की मुस्कान जागरण त्योहार का।
बदल रहा है भाग्य आज से बाजारों का।
निर्धन और अमीर सभी हैं जश्न मनाते।
मिलजुल कर सब साथ बैठकर खाना खाते।
दूजों के खातिर सदा करते हैं जो काम को।
वहीं पर्व बन साथ रह रहते अपने धाम को।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

हिन्दी दिवस के पूर्व संध्या पर आयोजित काव्यगोष्ठी

प्रयागराज। डॉ अमित त्रिपाठी के आवास पर हिन्दी दिवस की पूर्व संध्या पर एक सरस काव्यगोष्ठी का आयोजन शहर समता अखबार के संपादक उमेश श्रीवास्तव की अध्यक्षता में

हुआ। मुख्य अतिथि डॉ शंभुनाथ त्रिपाठी 'अंशुल' रहें और विशिष्ट अतिथि रचना सक्सेना रहीं। काव्यगोष्ठी का कुशल संचालन डॉ इंदु प्रकाश मिश्र ने किया। इस काव्यगोष्ठी में विपिन दिलकश, नगीना द्विवेदी, क्षमा द्विवेदी, पुष्कर प्रधान, पुष्पा श्रीवास्तव, अभिषेक केसरवानी, डॉ रंजना सिंह, दुर्गेश मिश्रा, शरद शुक्ला, और डॉ अमित त्रिपाठी आदि ने काव्यपाठ किया। इस आयोजन में डॉ रंजना बाजपेयी जी उपस्थित रहीं।

डॉ. आकांक्षा पाल को मिला काशी रत्न सम्मान एवं नेशन बिल्डर्स अवार्ड 2026

प्रयागराज। सीएमपी डिग्री कॉलेज, प्रयागराज के संगीत विभाग की अतिथि सहायक प्राध्यापिका डॉ. आकांक्षा पाल को संगीत एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए वाराणसी में आयोजित राष्ट्रीय स्तर के समारोह में 'काशी रत्न सम्मान 2026' और रोटरी क्लब ऑफ इलाहाबाद एकेडमिया की ओर से नेशन बिल्डर्स अवार्ड 2026 से अलंकृत किया गया ।आप लंबे समय से भारतीय संगीत के शिक्षण, शोध एवं प्रचार–प्रसार के क्षेत्र में सक्रिय हैं। आपकी

शैक्षणिक एवं सांगीतिक उपलब्धियों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान मिली है। इससे पूर्व आपको विभिन्न प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है।

मथुरा के चार शिक्षक बने मास्टर ट्रेनर

जनगणना–2027 के दूसरे चरण की संभालेंगे कमान, 16 सितंबर से लखनऊ में प्रशिक्षण

मथुरा। जनगणना–2027 के दूसरे चरण में मथुरा के चार शिक्षकों को अहम जिम्मेदारी मिली है। बेसिक शिक्षा विभाग के बलवीर सिंह, गिरिश कौशिक, प्रकाश चंद और सुधीर सोलंकी को जनसंख्या गणना के लिए मास्टर ट्रेनर नामित किया गया है। ये जिले में प्रगणकों और पर्यवेक्षकों को प्रशिक्षण देने के साथ तकनीकी मार्गदर्शन भी करेंगे।

चारों शिक्षक जनगणना के पहले चरण हाउस लिस्टिंग ऑपरेशन में फील्ड ट्रेनर के रूप में काम कर चुके हैं। उनके बेहतर कार्य और अनुभव को देखते हुए जिलाधिकारी मथुरा ने उन्हें मास्टर ट्रेनर की जिम्मेदारी सौंपी है। बलवीर सिंह को ेप अभियान में उत्कृष्ट कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ सुपरवाइजर के रूप में मुख्य निर्वाचन अधिकारी, उत्तर प्रदेश द्वारा सम्मानित भी किया जा चुका है।

चारों मास्टर ट्रेनरों का 16 से 19 सितंबर तक दीनदयाल उपाध्याय राज्य ग्रामीण विकास संस्थान, बक्शी का तालाब, लखनऊ में चार दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण होगा। इसके बाद वे जिले में नियुक्त फील्ड ट्रेनरों को तीन दिवसीय प्रशिक्षण देंगे।

मास्टर ट्रेनर प्रगणकों और पर्यवेक्षकों को जनगणना प्रक्रिया, मोबाइल एप के इस्तेमाल और तकनीकी दिक्कतों के समाधान में भी मार्गदर्शन देंगे। चार शिक्षकों को यह जिम्मेदारी मिलना बेसिक शिक्षा विभाग के लिए उपलब्धि माना जा रहा है।

सम्पादकीय........

नस्लभेदी अमेरिका

यूं तो ट्रंप प्रशासन भारतीयों को नस्लीय आधार पर निशाना बनाने का मौका कभी नहीं छोड़ता, लेकिन हाल ही में अमेरिकी डिपार्टमेंट ऑफ होमलैंड सिक्योरिटी यानी डीएचएस द्वारा जारी एक विवादित विज्ञापन ने उसकी संकीर्ण सोच को ही उजागर किया है। हालांकि, अमेरिका के हिंदू,सिख संगठनों और डेमोक्रेट नेताओं द्वारा पुरजोर विरोध करने के बाद सोशल मीडिया पर पोस्ट किया गया वह विज्ञापन हटा लिया गया, जिसमें 'मिस्टर सिंह' को निशाना बनाया गया था। निश्चित रूप से इस अप्रिय घटना को सिर्फ एक पोस्ट हटाने के बावजूद नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। दूसरे अर्थों में यह अमेरिका में भारतीयों को लगातार निशाना बनाने की लगातार की जा रही कोशिशों का ही हिस्सा भर है। दरअसल, अमेरिका में बिना लाइसेंस वाले कमर्शियल ड्राइवरों के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान के तहत जारी इस विज्ञापन में एआई के जरिये बनाई गई, एक दाढ़ी वाले गेहुंआ रंग के व्यक्ति की तस्वीर का इस्तेमाल किया गया था। इसके साथ अभद्र भाषा के साथ चेतावनी वाला संदेश भी लिखा गया था– 'हमारी सड़कों से हट जाओ, तुम्हें गाड़ी चलाना नहीं आता, मिस्टर सिंह।' उसके बाद धमकी दी गई थी, 'खुद देश छोड़कर चले जाओ या अंजाम भुगतो।' दशकों से पूरी दुनिया की सरकारों को मानवता, धर्मनिरपेक्षता, मौलिक अधिकार, समरसता जैसे भारी–भरकम शब्दों के जरिये अस्थिर करने के प्रयासों में लगा अमेरिका अपनी इस कवायद से बेनकाब होता नजर आया है। स्वाभाविक रूप से इस विज्ञापन के सामने आने के बाद भारतीय–अमेरिकियों और सिख संगठनों के साथ–साथ डेमोक्रेट नेताओं ने भी इस पोस्ट को नस्लवादी और भेदभावपूर्ण बताकर घोर निंदा की है। इसमें दो राय नहीं कि आप्रवासन कानून को लागू करने या खतरनाक तरीके से गाड़ी चलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने में कुछ भी गलत नहीं है। असल में, जब लापरवाही या आपराधिक व्यवहार के कारण मौतें होती हैं, तो सरकारों का यह भी कर्तव्य होता है कि वह कार्रवाई करें। लेकिन कानून का पालन व्यक्ति के व्यवहार के आधार पर होना चाहिए न कि उसकी जाति, रूप–रंग, धर्म या उपनाम के आधार पर किया जाए। इसमें दो राय नहीं है कि भारतीय व अन्य प्रवासियों ने अपने खून–पसीने से अमेरिका की समृद्धि को सींचा है। उनकी समृद्धि अथक प्रयासों व कड़ी मेहनत का फल है जो आज गोरे अमेरिकनों को रास नहीं आता। अब तक भारतवंशियों का विरोध अमेरिका में गुपचुप ढंग से होता था, ट्रंप के शासनकाल में वह खुलकर सामने आने लगा है। अमेरिका की एक जिम्मेदार फेडरल एजेंसी डीएचएस जब इस तरह का कृत्य करती है तो यह शर्मनाक ही कहा जाएगा। उसके विज्ञापन में भारत में आदर से लिये जाने वाले 'सिंह' उपनाम का दुर्भावना से प्रयोग किया जाना विशेषकर चिंता की बात है। यह उपनाम सिखों में आम है और कुछ हिंदू भी इसका प्रयोग करते हैं। इस शब्द को गैर–कानूनी आप्रवासन या खतरनाक ड्राइविंग से जोड़ने से एक आम सांस्कृतिक पहचान को एक मजाक में बदले जाने का खतरा पैदा होता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि सिख समुदाय को 9ध्11 के हमलों के बाद लगातार नफरत प्रेरित अपराधों का सामना करना पड़ा था। उनकी पहचान को अज्ञानतावश हमलावरों से जोड़ कर देखा जा रहा था। इस समुदाय के लिये यह दंश झेलना बेहद कष्टकारी रहा है। डीएचएस यह दलील दे सकता है कि इस अभियान का मकसद गंभीर अपराधों के आरोपी विदेशी नागरिकों से जुड़े कुछ खास मामलों को उजागर करना था। यदि ऐसा है तो इन मामलों की जांच होनी चाहिए। साथ ही जहां जरूरी हो, वहां कानूनी कार्रवाई भी करनी चाहिए। लेकिन किसी व्यक्ति विशेष की गलत हरकत को पूरे समुदाय पर शक करने की वजह नहीं बनाया जा सकता। निस्संदेह, सरकारों को लोगों की सुरक्षा को बढ़ावा देना चाहिए और कानूनी तौर पर होने वाले आव्रजन में मदद करनी चाहिए– न कि पूरे समुदाय का मजाक उड़ाकर बदनाम करना चाहिए। अमेरिका को चाहिए कि वह अपने कानूनों को निष्पक्ष रूप से लागू करे। सभी नागरिकों पर एक ही नियम–कानून लागू होने चाहिए। अब चाहे उनका सरनेम, धर्म, त्वचा का रंग या मूल नागरिकता किसी भी देश की हो।

जी-२० से ब्रिक्स तक, भारत के 'मानव-केंद्रित दृष्टिकोण' का महत्व

डॉ. दीपक पाचपोर

पहले विश्व युद्ध से दूसरे विश्व युद्ध और फिर शीत युद्ध तक के इस सफर में, चिंता का एक अहम विषय कुछ विचारों का दबदबा और दूसरों की अनदेखी है।

–डा. आमना मिर्जा

अंतर्राष्ट्रीय संबंध अध्ययन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। पहले यह केवल कूटनीतिक इतिहास के अध्ययन तक सीमित था, लेकिन आज इसका प्रभाव कई अन्य विषयों पर भी है। इसने एक लंबा सफर तय किया है। इसका अध्ययन और प्रभाव केवल युद्धक्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण, पारिस्थितिकी और अर्थव्यवस्था से भी जुड़ा है। पहले विश्व युद्ध से दूसरे विश्व युद्ध और फिर शीत युद्ध तक के इस सफर में, चिंता का एक अहम विषय कुछ विचारों का दबदबा और दूसरों की अनदेखी है। वैश्वीकरण शीत युद्ध के बाद के दौर की एक अहम पहचान बन गया। सोवियत संघ का विघटन, बर्लिन की दीवार का गिरना और नव–उदारवाद का उदय उस समय की महत्वपूर्ण विशेषताएं बन गईं। हालांकि, समय के साथ सुधार लाने का अपना एक अनोखा तरीका होता है। वैश्विक शासन के मामले में भी ऐसा ही देखने को मिला। समय के साथ, वैश्वीकरण के विभिन्न पहलुओं में मानवीय पक्ष की कमी देखी गई। इसका मतलब यह नहीं है कि कोई आपस में जुड़ी हुई वैश्विक दुनिया नहीं चाहता। हालांकि, जब अर्थव्यवस्था, समाज, पर्यावरण और संस्कृति को सिर्फ मुनाफे के एजेंडे के हिसाब से ढाला जाता है, तो यह एक समस्या बन जाती है। यह समझना जरूरी है कि मुनाफा कमाना बुरी बात नहीं है, लेकिन यह शासन का एकमात्र पैमाना नहीं हो सकता। संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के 75 साल पूरे होने से लेकर 2023 में जी–20 की अध्यक्षता और नई दिल्ली में 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन तक, भारत ने हमेशा वैश्विक शासन में सुधार का महत्वपूर्ण आह्वान किया है। जी–20 समिट में 'मानव–केंद्रित वैश्वीकरण' से लेकर ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में 'प्रतिनिधित्व, जवाबदेही और नियम–निर्माण' पर ध्यान केंद्रित करने की बात तक, भारत ने ग्लोबल गवर्नेंस की गलतियों को सुधारने की अहम जरूरत पर बात की है। इसमें यह भी है कि ग्लोबल डिवैल्पमैंट के लिए किसी भी समस्या–समाधान के तरीके का आज के समय की वास्तविकताओं से जुड़ा होना जरूरी है। ब्रिक्स नई दिल्ली घोषणापत्र अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिए एक सुधारात्मक दृष्टिकोण पेश करने की सार्थक कोशिश करता है। शांति और सुरक्षा, विश्व व्यापार संगठन, कूटनीति और बातचीत पर ध्यान, परमाणु सुरक्षा आदि इस घोषणापत्र के महत्वपूर्ण ड्क्षबदू हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि जी–20 से लेकर ब्रिक्स तक एक सक्रिय सदस्य होने के नाते, 'लोगों पर केंद्रित दृष्टिकोण' के विचार ने भारत को 'मल्टी–अलाइनमैंट' में ताकत और अहमियत दिलाई है। इंसान को केंद्र में रखने वाला नजरिया जरूरी है क्योंकि बदलाव और गतिशीलता ही विकास की सच्चाई है। इंसानी पहलू की समझदारी ही किसी भी प्रक्रिया को जमीनी स्तर से जुडने की क्षमता देती है। तकनीकी तरक्की और दूसरे विकास हमेशा से इंसानी इतिहास का हिस्सा रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में ज्ञान के प्रमुख ढांचों ने मानवीय पहलू को नजरअंदाज किया। दूसरे विश्व युद्ध के बाद से दुनिया बहुत बदल गई है। आज के दौर में वैश्विक दुनिया के मुद्दे गतिशील हैं। राष्ट्रीय हित और शक्ति बहुआयामी हैं। ऐसे हालात में, लोगों पर केंद्रित दृष्टिकोण आर्थिक लाभ हासिल करने की दिशा में काम करने के लिए बेहतर स्थिति प्रदान करता है। यही वजह है कि मतभेदों के बावजूद ईरान और यू.ए.ई. को एक ही मंच पर देखा गया। व्यापार बाधाओं को दूर करना, कौशल विकास को प्रोत्साहित करना, स्टार्ट–अप, इनोवेशन और आर्थिक समझौतों पर काम करना और साथ ही लोगों पर केंद्रित दृष्टिकोण अपनाना भविष्य की बेहतर दुनिया के लिए बहुत फायदेमंद होगा। वैश्विक शासन के लिए एक नए और अनोखे नजरिए की जरूरत है। लोगों को केंद्र में रखने वाले नजरिए और 'मानवता सबसे पहले' की भावना न केवल सभ्यतागत मूल्यों से जुड़ी है, बल्कि यह एक मजबूत भविष्य की ओर बढने का एक महत्वपूर्ण तरीका भी है। यह अतीत की गलतियों को सुधारने का एक अहम मौका देता है। यह सहयोग पर काम करने के लिए एक उपयोगी क्षेत्र पेश करता है। इसमें अलग–अलग हितों वाले पक्षों के बीच आम सहमति बनाने की क्षमता भी है।

भारत की सार्वभौम क्रेडिट रेटिंग में बढ़ोतरी

प्रह्लाद सबनानी

जापान क्रेडिट रेटिंग एजेन्सी (जेसीआरए) ने भारत की सार्वभौम (सावरेन) क्रेडिट रेटिंग में सुधार करते हुए इसे ठठठ+ से बढ़ाकर ।– कर दिया है। भारत की सार्वभौम क्रेडिट रेटिंग में बढ़ोतरी कई कारणों के चलते की गई है। भारतीय अर्थव्यवस्था लगातार विकास के पथ पर तेजी से दौड़ रही है और भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 8 प्रतिशत की वृद्धि दर बनी हुई है। भारत आज पूरे विश्व में समस्त बड़े देशों के बीच सबसे तेज गति से आगे बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बन गई है एवं भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका का निर्वहन करता हुआ दिखाई दे रहा है। दूसरा, भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, इस देश में नागरिकों को अपने विचार रखने की आजादी है अतः विश्व के अन्य देश भारत की ओर आकर्षित हो रहे हैं और भारत में विदेशी निवेश लगातार बढ़ रहा है। अभी हाल ही में अन्य देशों में निवासरत भारत के मूल नागरिकों ने भारत में 13,600 करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि भारतीय बैंकों में जमा की है। यह भारत की शक्ति एवं मजबूती को दर्शाता है। तीसरा, भारत में आर्थिक सुधार कार्यक्रम लगातार चल रहे है। हाल ही में, वस्तु एवं सेवा कर की दरों में कमी की गई थी जिसके चलते भारतीय नागरिकों की जेब में एक लाख करोड़ रुपए से अधिक की राशि पहुंची है, इससे भारतीय नागरिकों की खर्च करने की क्षमता में वृद्धि हुई है। चौथा, भारत में डिजिटल आधारभूत संरचना को मजबूती प्रदान की गई है। भारतीय यूपीआई की मांग अब विश्व के अन्य देशों द्वारा भी की जा रही है। जनधन योजना के अंतर्गत देश के करोड़ों नागरिकों के बैंक खाते खोले गए हैं, जिन्हें आधार से जोड़ दिया गया है और स्मार्ट मोबाइल आज जैसे जेब में बैंक का कार्य करता हुआ दिखाई दे रहा है। डिरेक्ट बेनिफिट ट्रान्सफर योजना को भी बहुत सरल बना दिया गया है। इससे देश में भ्रष्टाचार में कमी आई है। पांचवां, भारत में हाल ही के समय में वित्तीय क्षेत्र में मजबूती आई है। मार्च 2026 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष में भारतीय बैंकों में सकल गैर निष्पादनकारी आस्तियां 1.8 प्रतिशत से भी नीचे आ गई हैं। यह अपने आप में एक रिकार्ड है। छठा, सरकारी खर्चों के उपयोग में अब सुधार दृष्टिगोचर है और इसकी गुणवत्ता भी सुधरी है। केंद्र सरकार के पूंजीगत खर्च पिछले 5 वर्षों में तीन गुना हो गए हैं। इससे भारत में रेल, रोड एवं पोर्ट की आधारभूत संरचना विकसित हुई है, जो विदेशी निवेशकों को भी भारत में अपना निवेश बढ़ाने के लिए आकर्षित कर रही है। सांतवा, भारत के विदेशी मुद्रा भंडार 68,400 करोड़ अमेरिकी डॉलर के रिकार्ड स्तर पर पहुंच गए हैं, जो कि भारत के लिए बहुत अच्छा सुरक्षा कवच बन गया है। आंठवां, भारत का वित्तीय घाटा वित्तीय वर्ष 2020–21 में 9.2 प्रतिशत था, जो वित्तीय वर्ष 2025–26 में घटकर 4.4 प्रतिशत के स्तर पर नीचे आ गया है। भारतीय अर्थव्यवस्था में उक्त 8 मानकों पर हुए सुधार के चलते जापान क्रेडिट रेटिंग एजेन्सी ने भारत के सार्वभौम क्रेडिट रेटिंग में बढ़ौतरी की है। विश्व की क्रेडिट रेटिंग एजेन्सीयों द्वारा विभिन्न देशों की आर्थिक एवं वित्तीय स्थिति के आधार पर इन देशों की क्रेडिट रेटिंग निर्धारित की जाती है। इन देशों द्वारा अथवा इन देशों के बैकों द्वारा एवं इन देशों की कम्पनियों द्वारा वैश्विक बाजार से उधार ली जाने वाली राशि पर ब्याज की दर इस क्रेडिट रेटिंग के आधार पर निर्धारित होती है। यदि क्रेडिट रेटिंग उच्च स्तर की रहती है तो उस देश द्वारा अंतरराष्ट्रीय बाजार में ली जाने वाली ऋणराशि पर ब्याज की दर कम निर्धारित होती है। दूसरे, इससे उस देश में विदेशी निवेश आकर्षित होता है, क्योंकि इन देशों में किया गया विदेशी निवेश सुरक्षित माना जाता है। विभिन्न क्रेडिट रेटिंग एजेन्सी द्वारा निम्न प्रकार की क्रेडिट रेटिंग प्रदान की जाती है। यह प्राइम क्रेडिट रेटिंग मानी जाती है एवं यह देश निवेश की दृष्टि से इन्वेस्टमेंट ग्रेड का है। क्रेडिट रेटिंग भी हाई ग्रेड की मानी जाती है। क्रेडिट रेटिंग अपर मीडीयम ग्रेड की मानी जाती है। पश्चिमी देशों की क्रेडिट रेटिंग एजेन्सीयों ने भारत की सार्वभौम क्रेडिट रेटिंग में पिछले कई वर्षों से बदलाव ही नहीं किया है जबकि भारत ने इस दौरान विशेष रूप से आर्थिक एवं वित्तीय क्षेत्र में अतुलनीय सुधार करते हुए विकास दर को बढ़ाने में सफलता प्राप्त की है। फिच नामक क्रेडिट रेटिंग एजेन्सी ने भारत की सार्वभौम क्रेडिट रेटिंग को अगस्त 2006 के बाद से परिवर्तित ही नहीं किया है, जो ठठठ– के स्तर पर लगातार बनी हुई है। इसी प्रकार, स्टैंडर्ड एंड पूअर नामक क्रेडिट रेटिंग एजेन्सी द्वारा 18 वर्ष पश्चात भारत की सार्वभौम क्रेडिट रेटिंग को 27 अगस्त 2026 को अपग्रेड करते हुए इसे ठठठ के स्तर पर ले आया गया है। एक अन्य क्रेडिट रेटिंग एजेन्सी मूडी ने जून 2020 के पश्चात भारत की सार्वभौम क्रेडिट रेटिंग में कोई परिवर्तन नहीं किया है और भारत को ठं3 की सार्वभौम क्रेडिट रेटिंग दी हुई है। उक्त एजेन्सीयां भारत की सार्वभौम क्रेडिट रेटिंग को उचित तरीके से नहीं दर्शाती हैं। जबकि, भारत के आर्थिक संकेतक बहुत मजबूत बने हुए हैं। हाल ही में, विश्व के चार प्रमुख वित्तीय संस्थानों ने भारत के आर्थिक विकास के संदर्भ में विशेष रिपोर्ट जारी की है। जिसमें भारत की आर्थिक प्रगति की सराहना की गई है। जेफ्रीज नामक वित्तीय संस्थान की रिपोर्ट कहती है कि मोबाइल फोन, स्टील, सीमेंट, सोलर पैनल एवं ट्रक के निर्माण के क्षेत्र में भारत आज दुनिया में दूसरे स्थान पर आ गया है। वर्ष 2014 में स्पेस के क्षेत्र में भारत में केवल एक स्टार्टअप था आज भारत में इस क्षेत्र में 400 से अधिक स्टार्टअप कार्य कर रहे हैं। चिप निर्माण में 12 प्रोजेक्ट पर भारत में काम हो रहा है एवं 2,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का निवेश इस क्षेत्र में हो रहा है। साथ ही, 3 विनिर्माण इकाईयों में उत्पादन भी प्रारम्भ हो गया है। जेफ्रीज ने इस रिपोर्ट को नाम दिया है "इंडिया न्यू इंडस्ट्रीयल रेवोल्यूशन"। दूसरी रिपोर्ट आई है बैंक ओफ अमेरिका से, जो कहती है कि भारत में बहुत कुछ बदल रहा है। पिछले 24 माह में भारत में 18 सुधार कार्यक्रम लागू हुए हैं। वस्तु एवं सेवा कर के ढांचे में 5 के स्थान पर मुख्यतः अब 2 दरें लागू कर दी गई हैं।

हिन्दी प्रेम

प्रेम में तो सर्वश्रेष्ठ, हिन्दी प्रेम समझूं मैं,
जोड़ती सबों को यह, जग से मिलाय है।
विविध रूपों में ढली, शब्द अलंकार भरी,
सजनी– सलोनी बन, मन को लुभाय है।।

भाव, रस, छंदबद्ध, पद, दोहा ,गीत रच,
सुर, लय ,ताल संग, काव्य मधुमाय है।
सरल –सहज हिन्दी, करती विस्तार घना,
भारती के भाल सजी, शोभा यह बढ़ाय है।।

संगीता 'सुमन'

हिंदी भाषा को सियासी नहीं, जमीनी हकीकत के नजरिए से आंकिए

कमलेश पांडे

ारत में हिंदी भाषा को लेकर चलने वाली राजनीति और उसकी जमीनी हकीकत के बीच एक बड़ा अंतर है, जो लगातार गहराता चला गया। हालांकि अब इसे पाटने और इससे लेकर गाहे बगाहे

उत्पन्न होते रहने वाले मतभेदों को दूर करने की जरूरत है। एक तरफ जहां हिंदी को राजनीतिक ध्रुवीकरण और भाषाई अस्मिता के हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, वहीं व्यावहारिक धरातल पर इसकी स्थिति बिल्कुल अलग नजर आती है। इसलिए जनसामान्य के नजरिए से ही इसका सम्यक समाधान अपेक्षित है। खासकर भारतीय अभिजात्य वर्ग यानी अंग्रेजी दां लोगों के इशारे पर दक्षिण–पश्चिम–पूर्वी भारतीय भाषाओं यथा तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मराठी भाषा–भाषियों में हिंदी के प्रति जो भाषाई सौतियाडाह दिखाई देती है, उससे स्थिति और जटिल हो जाती है। यदि तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मराठी भाषा–भाषी भी पंजाबी, बंग्ला और गुजराती भाषा–भाषियों की तरह हिंदी के प्रति सहज, सहनशील और जागरूक रहें तो भारत के हिंदी व प्रतिस्पर्धी भाषाई विवाद को न्यूनतम किया जा सकता है।

देश में हिंदी भाषा को लेकर जारी सियासत के कुछ मुख्य पहलू इस प्रकार हैं–

पहला, श्एक राष्ट्र, एक भाषाश का नैरेटिवरू केंद्र की राजनीति में अक्सर हिंदी को पूरे देश की संपर्क भाषा (स्पदा स्ंदहनंहम) या राष्ट्रीय पहचान के रूप में पेश करने की कोशिश की जाती है।

दूसरा, गैर–हिंदी राज्यों का विरोधरू तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में हिंदी को श्थोप जानेश (भ्पदकप प्उचवेपजपवद) का मुद्दा बनाकर क्षेत्रीय दल अपनी राजनीति को मजबूत करते हैं।

तीसरा, वोट बैंक और ध्रुवीकरणः उत्तर भारत में हिंदी प्रेम का कार्ड खेलकर मतदातों को लुभाया जाता है, जबकि दक्षिण में हिंदी विरोध क्षेत्रीय पहचान और भाषाई स्वाभिमान को बचाने का बड़ा जरिया बन जाता है।

जहां तक संवैधानिक और व्यावहारिक हकीकत की बात है तो इसके विभिन्न आयामों और उनकी वैधानिक व व्यावहारिक स्थिति पर गौर करना लाजिमी है–

पहली, राष्ट्रीय भाषा (छंजपवदंस स्ंदहनंहम) रू भारतीय संविधान में हिंदी को श्राजभाषाश (व्पिबपंस स्ंदहनंहम) का दर्जा प्राप्त है (अनुच्छेद 343), श्राष्ट्रभाषाश का नहीं। भारत की 22 आधिकारिक भाषाएं समान हैं।

दूसरी, जनसंख्या और पहुंच रू 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 43.6ः भारतीयों की मातृभाषा हिंदी (और उसकी बोलियां) है। यह देश की सबसे बड़ी बोली जाने वाली भाषा है।

तीसरी, बाजार की हकीकत रू राजनीति भले ही विरोध करे, लेकिन बॉलीवुड, ओटीटी (व्ज्ज) प्लेटफॉर्म, डिजिटल मीडिया और कॉर्पोरेट विज्ञापन दक्षिण और पूर्व के राज्यों में भी हिंदी में ही फल–फूल रहे हैं।

चौथी, रोजगार की चुनौती रू हिंदी भाषी राज्यों के युवा उच्च शिक्षा, विज्ञान और कॉर्पोरेट नौकरियों के लिए आज भी अंग्रेजी पर ही निर्भर हैं। हिंदी पट्टी में शिक्षा की गुणवत्ता का अभाव एक बड़ी चुनौती है।

हिंदी भाषा से जुड़ी मुख्य जमीनी सच्चाई इस प्रकार है जिन्हें नजरअंदाज करने से नीतिगत उलझने बढ़ेंगी

एक, भाषा थोपने से जुड़ा डररू गैर–हिंदी भाषी राज्यों की मुख्य चिंता यह है कि यदि केंद्रीय परीक्षाओं और नौकरियों में हिंदी को प्राथमिकता दी गई, तो उनके युवाओं के अवसर सीमित हो जाएंगे।

दो, बोलियों का नुकसानरू अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मैथिली और गढ़वाली जैसी समृद्ध बोलियों को हिंदी के व्यापक छत्र के नीचे समेटने से उनकी अपनी भाषाई विविधता कमजोर हो रही है।

तीन, अंग्रेजी का दबदबारू हिंदी की राजनीति करने वाले नेताओं के अपने बच्चे भी अक्सर अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ते हैं, जिससे आम जनता के लिए रोजगार आधारित शिक्षा का अंतर बना रहता है।

सच कहूं तो हिंदी भाषा भारत को जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है, लेकिन इसे किसी राजनीतिक एजेंडे या अनिवार्यता के बजाय आपसी संवाद और बाजार की जरूरत के तहत स्वाभाविक रूप से विकसित होने देना ही देश के बहुभाषी ताने–बाने को मजबूत रख सकता है।

बप्पा के आगमन से खुशी से झूमे एक्टर अर्जुन बिजलानी, घर में करवाई खास पूजा, बताया- बिजी शेड्यूल के बीच भी मिस नहीं करते पूजा

इस दौरान पूरी इंडस्ट्री बप्पा के रंग में रंगी हुई है। बॉलीवुड से लेकर टीवी इंडस्ट्री तक आज हर किसी कलाकार के घर में खुशी का माहौल है। इसी बीच टीवी एक्टर अर्जुन बिजलानी भी अपने घर बप्पा को लेकर आए हैं। हाल ही में उन्होंने एएनआई से बात करते हुए, उन्होंने बताया कि यह त्योहार उनके दिल के कितने करीब है। नागिन फेम एक्टर ने कहा कि आरती के लिए एक साथ आने और अपनों के साथ त्योहार मनाने की परंपरा इस मौके को उनके लिए बहुत खास बनाती है। अर्जुन ने कहा, गणेश चतुर्थी मेरे लिए हमेशा से बहुत खास रही है। महाराष्ट्रीयन होने के नाते, बप्पा बचपन से ही मेरी जिंदगी का हिस्सा रहे हैं, लेकिन मुंबई में रहने से इस त्योहार का अनुभव बिल्कुल अलग स्तर पर होता है। हर तरफ दिखने वाली ऊर्जा, भक्ति और एकजुटता बहुत खूबसूरत होती है। मेरे लिए, यह सिर्फ एक त्योहार नहीं है, बल्कि बप्पा को घर लाने, परिवार के साथ समय बिताने, एक साथ प्रार्थना करने और आभार महसूस करने का समय है। उन्होंने आगे कहा, बप्पा को घर लाने और परिवार के साथ मिलकर आरती करने की परंपरा मेरे दिल के बहुत करीब रही है। सबका एक साथ आना, अपनी व्यस्त जिंदगी से थोड़ा समय निकालकर साथ में प्रार्थना करना बहुत खास एहसास है। आज भी, मेरा शेड्यूल कितना भी व्यस्त क्यों न हो, मैं यह पक्का करता हूँ कि मैं सेलिब्रेशन के लिए वहां मौजूद रहूं। उन्होंने कहा, हम हर साल बप्पा को घर लाते हैं और पूरी खुशी और उत्साह के साथ मनाते हैं। मेरे और मेरे परिवार के लिए, वे दिन बहुत सारी पॉजिटिविटी, आरती, परिवार के साथ समय, खाने–पीने और बप्पा के लिए ढेर सारे प्यार से भरे होते हैं। अर्जुन बिजलानी ने भगवान गणेश से मिलने वाली जिंदगी की सीख के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि सबसे बड़ी सीख शांत रहना और भरोसे के साथ आगे बढ़ते रहना है। जिंदगी में हमेशा चुनौतियां आएंगी, लेकिन बप्पा हमें धैर्य, पॉजिटिविटी और विनम्रता के साथ उनका सामना करना सिखाते हैं। मैं खुद को याद दिलाने की कोशिश करता हूँ कि हर मुश्किल हमें कुछ सिखाती है और आखिर में हमें और मजबूत बनाती है। पिछले कुछ सालों में गणपति उत्सव मनाने की अपनी यादों को याद करते हुए अर्जुन ने कहा, इन सालों में बप्पा के साथ मेरी बहुत सी खूबसूरत यादें जुड़ी हैं। हर साल उत्सव से एक नई याद बनती है लेकिन भावना वही रहती है – सच्ची खुशी, आभार और बप्पा के लिए प्यार।

> “ अर्जुन ने कहा, गणेश चतुर्थी मेरे लिए हमेशा से बहुत खास रही है। महाराष्ट्रीयन होने के नाते, बप्पा बचपन से ही मेरी जिंदगी का हिस्सा रहे हैं, लेकिन मुंबई में रहने से इस त्योहार का अनुभव बिल्कुल अलग स्तर पर होता है। हर तरफ दिखने वाली ऊर्जा, भक्ति और एकजुटता बहुत खूबसूरत होती है।

करीना कपूर के घर गणेश चतुर्थी की धूम...सैफ ने खुद हाथों से बनाई बप्पा की मूर्ति

बॉलीवुड स्टार करीना कपूर ने सोमवार को फैंस को अपने परिवार के गणेश चतुर्थी सेलिब्रेशन की झलक दिखाई। एक्ट्रेस ने अपने पति और एक्टर सैफ अली खान की तस्वीरें शेयर कीं, जिसमें वे घर पर मिट्टी से इको–फ्रेंडली भगवान गणपति की मूर्ति बना रहे हैं। पहली तस्वीर में सैफ सफेद कुर्ता–पायजामा पहने फर्श पर बैठे हुए और अपने हाथों से मिट्टी की मूर्ति पर काम करते हुए दिख रहे हैं। इसके बाद करीना ने मिट्टी से बनी पूरी हो चुकी मूर्ति की तस्वीर शेयर की, जिसे लकड़ी की सतह पर रखा गया था। एक्ट्रेस ने बताया कि यह मूर्ति उनके छोटे बेटे जहांगीर अली खान, जिन्हें प्यार से श्जेहश कहा जाता है, ने बनाई थी। तस्वीर शेयर करते हुए करीना ने लिखारू ष्मेरे जेह बाबा ने बनाई है। सभी को गणेश चतुर्थी की शुभकामनाएं और शांति की कामना! जो लोग नहीं जानते, उन्हें बता दें कि करीना और सैफ ने अपने–अपने परिवारों के त्योहारों और परंपराओं को अपनाया है। करीना पंजाबी कपूर परिवार से हैं, जबकि सैफ मुस्लिम पटौदी परिवार से हैं, जिससे उनकी शादी अलग–अलग धर्मों के लोगों के बीच हुई शादी (इंटरफेथ मैरिज) बन गई। 2012 में शादी करने वाला यह कपल अक्सर अपने बच्चों, तैमूर और जेह के साथ अलग–अलग त्योहार मनाता रहा है। करीना पहले भी बता चुकी हैं कि उनका परिवार अलग–अलग धर्मों के त्योहार कैसे मनाता हैय उन्होंने कहा था कि क्रिसमस भी दिवाली की तरह ही मनाया जाता है और ईद भी उनके परिवार के सेलिब्रेशन का हिस्सा है। क्रिसमस लंच और दिवाली सेलिब्रेशन से लेकर बिरयानी और परिवार के साथ मिलन–जुलन वाली ईद की खुशियों तक, इस कपल ने घर पर परंपराओं का एक मिला–जुला रूप दिखाया है। प्रोफेशनल फ्रंट की बात करें तो, करीना अपनी आने वाली फिल्म श्दायराश के लिए पूरी तरह तैयार हैं, जिसमें पृथ्वीराज सुकुमारन भी हैं। मेघना गुलजार के डायरेक्शन में बनी यह फिल्म 18 सितंबर को रिलीज होने वाली है।

‘हनुमान अंश’ के बाद विशाल चतुर्वेदी की नई फिल्म का ऐलान, महाकवि तुलसीदास की जिंदगी पर बनेगी ‘रामबोला’

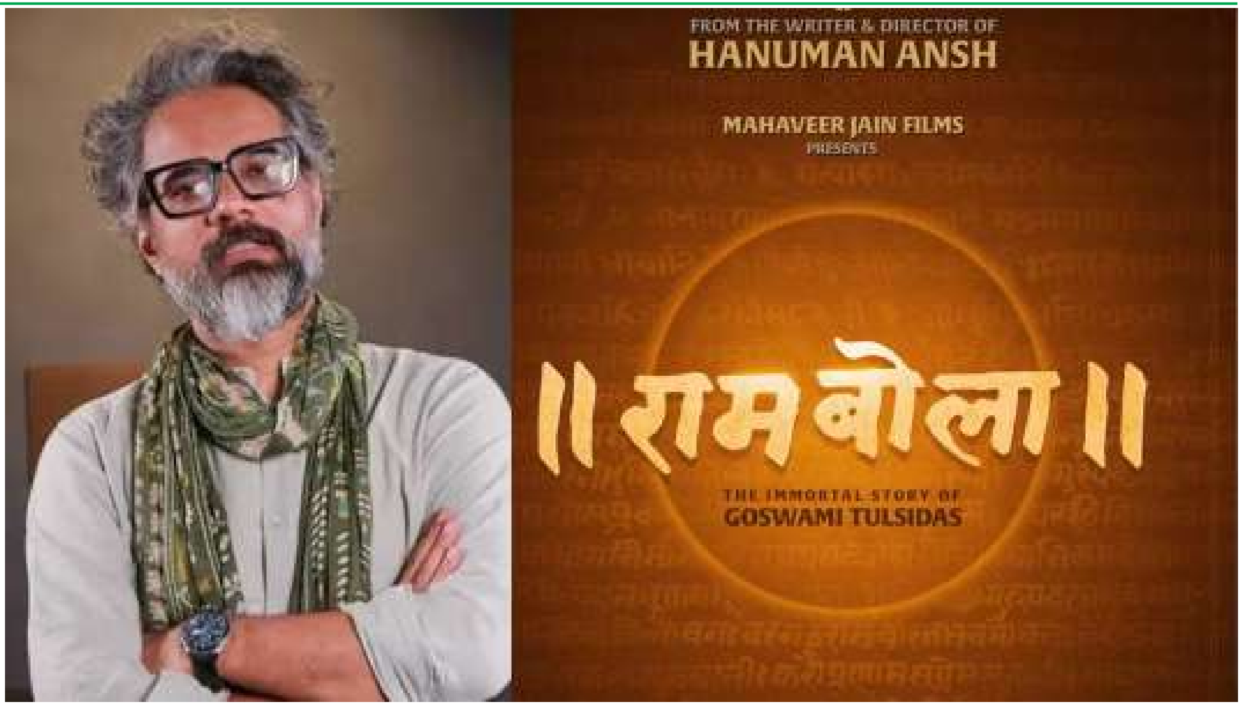

भारतीय संत परंपरा और आध्यात्मिक विरासत से जुड़ी एक और महत्वपूर्ण कहानी अब बड़े पर्दे पर आने वाली है। हाल ही में ‘हनुमान अंश’ जैसी फिल्म के जरिए चर्चा में आए लेखक–निर्देशक विशाल चतुर्वेदी और महावीर जैन फिल्म्स ने अपनी अगली फिल्म ‘रामबोला’ की घोषणा कर दी है। यह फिल्म महान संत, कवि और आध्यात्मिक व्यक्तित्व महाकवि गोस्वामी तुलसीदास के असाधारण जीवन पर आध ाारित होगी। रामबोला’ का लेखन और निर्देशन विशाल चतुर्वेदी ही करेंगे। फिल्म के जरिए तुलसीदास के जीवन की उस यात्रा को पर्दे पर उतारने की कोशिश की जाएगी, जिसने उन्हें भारतीय साहित्य और आध्यात्मिक परंपरा की सबसे प्रभावशाली शख्सियतों में शामिल किया। उनकी भक्ति, जीवन में आए बदलाव और साहित्यिक योगदान फिल्म की कहानी के प्रमुख हिस्से होंगे।‘रामबोला’ सिर्फ एक ऐतिहासिक या धार्मिक कहानी के तौर पर नहीं, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति की यात्रा के रूप में पेश की जाएगी, जिनके जीवन में आए परिवर्तन ने भारतीय संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया। गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति और उनकी रचनाओं ने आने वाली कई पीढ़ियों को प्रभावित किया है।फिल्म का उद्देश्य उनके जीवन के उन पहलुओं को सामने लाना है, जिनसे उनकी आध्यात्मिक यात्रा और साहित्यिक विरासत को समझने में मदद मिलती है। ऐसे में यह देखना दिलचस्प होगा कि विशाल चतुर्वेदी इस कालजयी व्यक्तित्व की कहानी को किस सिनेमाई अंदाज में पेश करते हैं।विशाल चतुर्वेदी ने इससे पहले ‘हनुमान अंश’ के जरिए भारतीय संत परंपरा से जुड़ी कहानी को बड़े पर्दे पर प्रस्तुत किया था। फिल्म की सफलता के बाद अब उनका अगला प्रोजेक्ट भी इसी परंपरा की एक महान विभूति के जीवन पर आधारित है।‘हनुमान अंश’ में श्री नीब करौरी बाबा की कहानी को केंद्र में रखा गया था, जबकि ‘रामबोला’ में गोस्वामी तुलसीदास की जीवनगाथा दिखाई जाएगी। लगातार दो फिल्मों के जरिए भारतीय आध्यात्मिक और संत परंपरा से जुड़ी कहानियों को सिनेमा तक लाने की यह कोशिश विशाल चतुर्वेदी के लिए एक अलग पहचान बनाने वाली दिशा भी साबित हो सकती है।‘रामबोला’ का निर्माण महावीर जैन, विशाल चतुर्वेदी, अमित उपाध्याय और रघुवेंद्र सिंह मिलकर करेंगे। महावीर जैन फिल्म्स इससे पहले भी अलग–अलग विषयों और बड़े कलाकारों के साथ कई महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट्स पर काम कर रहा है।प्रोडक्शन हाउस की आगामी फिल्मों में मृगदीप सिंह लांबा की ‘नागजिला’ शामिल है, जिसमें कार्तिक आर्यन मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। इसके अलावा सूरज बड़जात्या की ‘ये प्रेम मोल लिया’ में आयुष्मान खुराना और शरवरी की जोड़ी दिखाई देगी। प्रोडक्शन हाउस की एक अन्य फिल्म ‘व्हाइट’ भी चर्चा में है। यह कहानी वैश्विक आध्यात्मिक गुरु गुरुदेव श्री श्री रविशंकर से प्रेरित एक घटना पर आधारित बताई गई है और इसमें विक्रांत मैसी मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। महाकवि गोस्वामी तुलसीदास की कहानी भारतीय जनमानस और संस्कृति में गहराई से रची–बसी है। ऐसे में उनकी जिंदगी को बड़े पर्दे पर पेश करना निर्माताओं और निर्देशक के सामने एक बड़ी जिम्मेदारी भी होगी। हनुमान अंश’ के बाद विशाल चतुर्वेदी एक बार फिर भारतीय संत परंपरा की एक महान विभूति की कहानी लेकर आ रहे हैं। अब दर्शकों की नजर इस बात पर होगी कि ‘रामबोला’ तुलसीदास के जीवन और उनकी आध्यात्मिक यात्रा को किस तरह से सिनेमाई रूप देती है।

स्टार किडस होने का बहुत दवाब है...बीबी 20 में खूब रोई मनोज तिवारी की बेटी, बोलीं– ठीक से हंस भी नहीं पाती थी

एक्टर–नेता और भोजपुरी स्टार मनोज तिवारी की बेटी, सिंगर–सॉन्गराइटर रीति तिवारी ने एक मशहूर पिता की छाया में बड़े होने के दबाव के बारे में खुलकर बात की। सिंगर ने बताया कि उन्होंने अपनी जिंदगी का ज्यादातर हिस्सा जान–बूझकर खुद को रोकते हुए बिताया है क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं उनके परिवार का नाम खराब न हो जाए। रविवार को वीकेंड का वार एपिसोड के दौरान, मनोज तिवारी की बेटी होने से जुड़ी उम्मीदों के बारे में बात करते हुए रीति ने कहा कि उन्हें बचपन से ही अपने व्यवहार पर लगातार नजर रखने के लिए सिखाया गया था– चाहे वह हंसने का तरीका हो या बात करने का– सिर्फ इसलिए क्योंकि वह मनोज तिवारी की बेटी थीं। मैं अपने परिवार का नाम खराब कर दूंगी। असल में, मैं खुद को रोक रही हूं। क्या आप समझ रहे हैं कि मैं क्या कह रही हूं ? उन्होंने बताया कि यह दबाव मुख्य रूप से उनके पिता की पब्लिक पहचान की वजह से था। मेरे पिता कौन हैं, इसकी वजह से। मुझे चिंता होती है कि कहीं मैं उनका नाम बहुत खराब न कर दूं। जब से मैं पैदा हुई हूं, मुझे यही बताया गया है कि मैं उनकी बेटी हूं। ठीक से व्यवहार करो। ठीक से हंसो। तुमने ऐसा क्यों कहा? तुमने ऐसा व्यवहार क्यों किया ? अगर तुम लोगों के बीच जाना चाहती हो, तो ऐसा व्यवहार करो। अगर तुम बाहर जाना चाहती हो, तो ऐसा व्यवहार करो। जो सोचती हो, वह मत कहो। दस बार सोचो। उन्होंने कहा कि इस लगातार कंडीशनिंग की वजह से उन्हें आखिरकार ऐसा महसूस होने लगा कि वह अपनी असली पहचान खो चुकी हैं। लेकिन मैं कुछ और बन गई हूं। मैं कुछ और हूं, मेरा भी एक हक है। मेरी जिंदगी में क्या हुआ? शायद मैंने इस बात को अपने अंदर इतनी गहराई से बिठा लिया कि मैं असली नहीं रह पाई। बातचीत में सुपरस्टार सलमान खान का भी जिक्र आया, रीति ने याद किया कि कैसे उन्हें सलमान खान ने समझा, जैसा अनुभव उन्हें शायद ही कभी हुआ हो। उन्होंने कहा, अपनी जिंदगी में पहली बार, मुझे लगा कि कोई मुझे देख पा रहा है। वह मुझे समझ पा रहे थे लेकिन कभी–कभी दिल भारी हो जाता है। बहुत सी बातें मन में आती हैं। मैं ऐसी इंसान नहीं हूं जो दस लोगों के सामने रो सके।ष उन्हें अपनी भावनाओं को दबाए रखने के बजाय उन्हें जाहिर करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसके बाद बातचीत में सलमान की उस सलाह का जिक्र आया जिसमें उन्होंने पिता से अलग अपनी पहचान बनाने की बात कही थी। उन्हें दिलासा दे रहे आसिफ खान ने सलमान की बात याद करते हुए कहा, षपिता ने अपनी इज्जत खुद कमाई है। तुम्हें भी अपनी इज्जत खुद कमानी चाहिए। मैं भी ऐसा ही करना चाहता था। इससे पहले, उन्होंने मनोज तिवारी की बेटी होने के कारण झेले गए बुरे बर्ताव, जिसमें रेप और जान से मारने की धमकियां भी शामिल थीं, के बारे में भी बात की थी। उन्होंने बताया कि जब भी वह अपनी राय रखती थीं, तो उन्हें दर्शकों की तरफ से जान से मारने और रेप की धमकियों का सामना करना पड़ता था।

मुंहासे और वजन घटाने में मुलेठी है अचूक उपाय, इम्मुनिटी भी होगी मजबूत

मुलेठी एक गुणकारी आयुर्वेदिक औषधि है, जो पेट की जलन, अपच, सर्दी–जुकाम और मोटापा कम करने में बेहद फायदेमंद है। इसके अलावा, यह चेहरे के मुंहासे मिटाने और बालों का झड़ना रोकने में भी मददगार साबित होती है। समस्या के अनुसार मुलेठी का सेवन पानी के साथ, चूसकर या लेप के रूप में किया जा सकता है।

आयुर्वेद में ऐसी कई जड़ी–बूटियां हैं, जो शरीर के कई अंगों का इलाज कर सकती हैं। इन्हीं में से एक है औषधि गुणों से भरपूर मुलेठी। पेट की जलन से लेकर त्वचा के दाग–धब्बे मिटाने तक, सिर से लेकर पांव तक मुलेठी काफी फायदेमंद मानी जाती है।

असल में सभी समस्याओं के लिए इसके सेवन का तरीका एक जैसा नहीं है। यदि आपको गले में खराश या खांसी है, तो मुलेठी का टुकड़ा चूस लेने से खांसी कम हो जाती है, लेकिन यदि आपके पेट में गैस या अपच की दिक्कत है, तो इसके पाउडर को गुनगुने पानी लेने की सलाह दी जाती है।

मुलेठी के फायदे और खाने का तरीका

मुलेठी शरीर की अंदरूनी समस्याओं को हल करती है। इसके लेप से शरीर की बाहरी समस्याओं का भी निवारण होता है। आइए आपको इसके फायदे बताते हैं।

पेट की जलन और अपच में राहत

जिन लोगों को हमेशा एसिडिटी रहती है या फिर खाना अच्छे से हजम नहीं होता है, तो उन्हें खाने के बाद मुलेठी पाउडर खाना चाहिए। मुलेठी एसिज कम करने में मदद करती है। वैसे यह पेट और आंतों की सूजन भी कम होती है।

सर्दी–जुकाम में फायदेमंद

अगर आप गले की खराश, सर्दी जुकाम से परेशान हैं, तो मुलेठी आपके काफी काम आएगी। यह ऑटोइम्यून बीमारियों को रोकने और इम्यूनिटी मजबूत करने में सहायक होते हैं।

वजन कम करता है

असल में मुलेठी मेटाबालिज्म को तेज करती है, शरीर में फैट जमा होने से रोकती है। जिससे वजन काबू में रहता है। यह फैट लिपिड मेटाबालिज्म को बेहतर बनाकर शरीर से टॉक्सिन्स को बाहर निकालने में मददगार है। वहीं, भूख को कंट्रोल करने में भी मदद करती हैं। इतना ही नहीं, मुलेठी के एंटी–इंफ्लेमेटरी गुण मोटापे से जुड़ी सूजन को कम करने में मदद करता है।

एक्ने होते हैं कम

यदि आपके चेहरे पर मुंहासे या पिंपल है तो मुलेठी का फेस पैक काम आ सकता है। इसके लिए 1 चम्मच मुलेठी पाउडर में एक से दो चम्मच गुलाब जल और शहद मिलाकर चेहरे पर लगाएं। इससे आपके पिंपल्स की समस्या दूर होगी।

बालों का झड़ना कम करता है

अगर आप काफी समय से बालों की झड़ने की समस्या से परेशान हैं, तो आप मुलेठी का सेवन भी कर सकते हैं या फिर बालों पर लगा सकती हैं। वहीं, मुलेठी का सेवन चाय या चूर्ण के रुप में किया जा सकता है, लेकिन बालों में लगाने के लिए इस विधि को अपनाना होगा।

विधि

सबसे पहले एक चम्मच मुलेठी पाउडर में दो चम्मच आंवला और हिना पाउडर और एक चम्मच सरसों का तेल मिलाकर एक पेस्ट बना लें। फिर इस पेस्ट को रात भर लोहे की छोटी कड़ाही में छोड़ दें। फिर इस पेस्ट को बालों पर लगाएं और फिर शैंपू कर लें। सप्ताह में एक से दो बार यह विधि अपनाने से बालों का झड़ना और टूटना कम होने लगता है।

डिस्क्लेमरः इस लेख के सुझाव सामान्य जानकारी के लिए हैं। इन सुझावों और जानकारी को किसी डॉक्टर या मेडिकल प्रोफेशनल की सलाह के तौर पर न लें। किसी भी बीमारी के लक्षणों की स्थिति में डॉक्टर की सलाह जरूर लें।

खाली होने पर गुड़गुड़ क्यों करता है पेट? जानिए इसकी वजह

पेट में गुड़गुड़ की आवाज आना कोई असामान्य बात नहीं है। अक्सर ऐसा तब होता है जब पेट खाली हो और हमें भूख लगी हो। लेकिन सिर्फ भूख ही इसकी वजह नहीं होती। हमारे पाचन तंत्र में होने वाली सामान्य गतिविधियां भी पेट से आने वाली इन आवाजों के लिए जिम्मेदार होती हैं। कई बार पेट की गुड़गुड़ाहट इतनी तेज होती है कि आसपास बैठे लोगों को भी सुनाई देने लगती है। ऐसे में लोग अक्सर सोचने लगते हैं कि आखिर पेट में इतनी आवाज क्यों हो रही है। दरअसल, इसके पीछे हमारे पेट और आंतों में लगातार चलने वाली प्रक्रिया होती है।

पेट में गुड़गुड़ की आवाज क्यों आती है

हमारा पाचन तंत्र हर समय काम करता रहता है। जब हम खाना खाते हैं तो पेट और आंतों की मांसपेशियां भोजन और तरल पदार्थ को आगे बढ़ाने का काम करती हैं। इस प्रक्रिया को पेरिस्टालसिस कहा जाता है। पेट खाली होने पर भी यह प्रक्रिया पूरी तरह बंद नहीं होती। पेट और छोटी आंत की मांसपेशियां समय–समय पर सिकुड़ती और फैलती रहती हैं। इस दौरान आंतों के अंदर मौजूद गैस और तरल पदार्थ आगे बढ़ते हैं। इन्हीं की हलचल से गुड़गुड़ या घरघराहट जैसी आवाज सुनाई देती है।

खाली पेट में आवाज ज्यादा क्यों सुनाई देती है

जब पेट में खाना मौजूद होता है तो वह अंदर होने वाली हलचल की आवाज को कुछ हद तक दबा देता है। लेकिन पेट खाली होने पर ऐसा नहीं होता। इसलिए आंतों की सामान्य गतिविधियों से पैदा होने वाली आवाज ज्यादा साफ सुनाई देती है। भूख लगने के दौरान शरीर में कुछ हार्मोनल बदलाव भी होते हैं। ये बदलाव पाचन तंत्र की गतिविधियों को प्रभावित कर सकते हैं। यही वजह है कि कुछ लोगों को भूख के समय पेट में ज्यादा हलचल और गुड़गुड़ महसूस होती है।

गैस भी हो सकती है इसकी वजह

पेट में आने वाली आवाजों का एक कारण गैस भी हो सकती है। खाना खाते या पानी पीते समय थोड़ी मात्रा में हवा पेट के अंदर चली जाती है। अगर कोई व्यक्ति बहुत जल्दी–जल्दी खाना खाता है, तो वह ज्यादा हवा निगल सकता है। इसके अलावा कुछ खाद्य पदार्थ भी आंतों में गैस बढ़ा सकते हैं। जब यह गैस आंतों के अंदर आगे बढ़ती है तो उससे भी गुड़गुड़ जैसी आवाज पैदा हो सकती है। कब्ज, अपच या अचानक खान–पान में बदलाव के कारण भी आंतों की गतिविधि में बदलाव आ सकता है। ऐसे में पेट में सामान्य दिनों की तुलना में ज्यादा आवाज सुनाई दे सकती है।

कब पेट की गुड़गुड़ को गंभीरता से लेना चाहिए

सिर्फ पेट से आवाज आना आमतौर पर चिंता की बात नहीं होती। ज्यादातर मामलों में यह पाचन तंत्र की सामान्य प्रक्रिया का हिस्सा है। लेकिन अगर पेट की गुड़गुड़ लगातार बनी रहे और इसके साथ दूसरे लक्षण भी दिखाई दें, तो इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। अगर पेट की आवाज के साथ तेज पेट दर्द, लगातार उल्टी, दस्त, कब्ज या मल त्याग में परेशानी जैसी समस्या हो रही है, तो डॉक्टर से सलाह लेना बेहतर है। खासकर तेज दर्द या लगातार बने रहने वाले लक्षणों को केवल भूख या गैस समझकर नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

पेट की गुड़गुड़ कम करने के लिए क्या करें

पेट को स्वस्थ रखने के लिए रोजमर्रा की कुछ आदतों पर ध्यान देना जरूरी है। खाना धीरे–धीरे खाएं और उसे अच्छी तरह चबाकर खाएं। लंबे समय तक खाली पेट रहने से बचें। दिनभर पर्याप्त मात्रा में पानी पीते रहें। संतुलित और पौष्टिक आहार लें। बहुत जल्दी–जल्दी खाने की आदत से बचें। नियमित रूप से शारीरिक गतिविधि या एक्सरसाइज करें।

अगर किसी खास खाने के बाद बार–बार गैस या पेट में आवाज की समस्या होती है, तो उस पर ध्यान दें। कुल मिलाकर, पेट में गुड़गुड़ होना शरीर की सामान्य पाचन प्रक्रिया का हिस्सा हो सकता है। खासकर खाली पेट में ऐसा होना काफी आम है। लेकिन अगर इसके साथ दर्द, उल्टी, दस्त या मल त्याग से जुड़ी परेशानी भी हो रही है, तो डॉक्टर की सलाह लेना जरूरी है। किसी भी गंभीर लक्षण की स्थिति में खुद से दवा लेने के बजाय विशेषज्ञ से संपर्क करना ज्यादा सुरक्षित रहता है।

नाखूनों के पास बार-बार छिलती है खाल? जानें इसकी वजह और राहत के 5 तरीके

क्या आपने कभी गौर किया है कि अचानक नाखूनों के आसपास की खाल छिलने लगती है? कई बार इसके साथ हल्का दर्द, जलन या खुजली भी परेशान करने लगती है। देखने में यह समस्या भले ही छोटी लगे, लेकिन बार–बार ऐसा होना आपकी स्किन के रूखेपन, ज्यादा पानी या साबुन के संपर्क, किसी एलर्जी या एक्जिमा जैसी समस्या से जुड़ा हो सकता है। इतना ही नहीं, खाल को बार–बार नोचने या काटने की आदत भी इसे बढ़ा सकती है।

आइए जानते हैं इसके पीछे की आम वजहें और राहत पाने के 5 आसान तरीके।

नाखूनों के आसपास की खाल छिलने की क्या वजह है?

सर्दी और ड्राई वेदरः ठंड या कम नमी वाले मौसम में त्वचा तेजी से ड्राई हो सकती है। हाथों की स्किन पर इसका असर खासतौर पर दिखाई देता है और नाखूनों के आसपास की त्वचा रूखी होकर फटने या छिलने लगती है।

बार–बार हाथ धोनाः साबुन, डिटर्जेंट और अल्कोहल–बेस्ड सैनिटाइजर का बहुत ज्यादा इस्तेमाल त्वचा की प्राकृतिक नमी और ऑयल को कम कर सकता है। इससे हाथों की त्वचा रूखी, खुरदरी और संवेदनशील हो सकती है।

पानी और केमिकल्स का ज्यादा संपर्कः बर्तन धोने, सफाई करने या काम के दौरान लगातार पानी और क्लीनिंग प्रोडक्ट्स के संपर्क में रहने से भी उंगलियों के आसपास की त्वचा में जलन और ड्राइनेस हो सकती है।

एलर्जी या एक्जिमाः अगर खाल छिलने के साथ लालिमा, खुजली, जलन, सूखापन या छोटे–छोटे चकत्ते भी नजर आ रहे हैं, तो इसके पीछे कॉन्टैक्ट डर्मेटाइटिस या एक्जिमा जैसी त्वचा संबंधी समस्या हो सकती है।

खाल नोचने या काटने की आदतः कई लोग अनजाने में नाखूनों के आसपास की सूखी खाल को खींच देते हैं। इससे त्वचा में छोटे घाव बन सकते हैं और इंफेक्शन का खतरा बढ़ सकता है।

पोषक तत्वों की कमीः कुछ मामलों में पोषण की कमी त्वचा और नाखूनों की सेहत को प्रभावित कर सकती है, लेकिन सिर्फ नाखूनों के आसपास की खाल छिलने के आधार पर विटामिन या आयरन की कमी मान लेना सही नहीं है। बार–बार समस्या होने पर डॉक्टर कारण की जांच कर सकते हैं।

राहत पाने के 5 आसान तरीके

नियमित रूप से मॉइस्चराइजर लगाएंः हाथ धोने के बाद और दिन में कई बार अच्छी क्वालिटी का गाढ़ा मॉइस्चराइजर लगाएं। नाखूनों और उनके आसपास की त्वचा पर भी मॉइस्चराइजर या पेट्रोलियम जेली लगाई जा सकती है। इससे त्वचा की नमी बनाए रखने में मदद मिलती है।

बहुत गर्म पानी से बचेंः हाथ धोने के लिए बहुत गर्म पानी की जगह हल्के गुनगुने पानी का इस्तेमाल करें। हाथ धोने के बाद उन्हें अच्छी तरह सुखाएं और तुरंत मॉइस्चराइजर लगाएं।

डिटर्जेंट और केमिकल्स से हाथ बचाएंः बर्तन धोते या घर की सफाई करते समय दस्ताने पहनें, खासकर अगर किसी प्रोडक्ट के इस्तेमाल के बाद त्वचा में जलन या खुजली बढ़ जाती है। जरूरत से ज्यादा सैनिटाइजर और हार्श साबुन के इस्तेमाल से भी बचें।

सूखी खाल को खींचकर न निकालेंः नाखून के पास निकली हुई खाल को दांतों से काटने या हाथ से खींचने की गलती न करें। ऐसा करने से त्वचा में कट लग सकता है और बैक्टीरिया के कारण इंफेक्शन हो सकता है। अगर कोई हिस्सा बहुत ज्यादा निकला हुआ है, तो उसे साफ नेल कटर या क्यूटिकल निपर से सावधानी से ट्रिम किया जा सकता है।

डाइट पर भी दें ध्यानः त्वचा और नाखूनों की अच्छी सेहत के लिए संतुलित डाइट जरूरी है। खाने में फल, सब्जियां, दालें, साबुत अनाज, नट्स, बीज, अंडे या अन्य प्रोटीन स्रोत शामिल करें। अगर आपको पोषक तत्वों की कमी का शक है, तो बिना जांच के सप्लीमेंट लेने की बजाय डॉक्टर से सलाह लें।

कब डॉक्टर को दिखाना चाहिए?

अगर नाखून के आसपास की त्वचा बार–बार छिल रही है या इसके साथ तेज दर्द, ज्यादा लालिमा, सूजन, गर्माहट, पस या लगातार खुजली हो रही है, तो इसे नजरअंदाज न करें। ये इंफेक्शन या किसी त्वचा संबंधी समस्या के संकेत हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में त्वचा विशेषज्ञ से सलाह लेना बेहतर है।

फारसी सलवार को क्रॉप टॉप और शार्ट कुर्ती के साथ ऐसे करें स्टाइल, मिलेगा मॉडर्न लुक

पारंपरिक परिधान में आधुनिक और ट्रेंडी लुक पाने के लिए आजकल फारसी सलवार काफी पसंद की जा रही है। आरामदायक और फ्लोई होने के कारण इसे शॉर्ट कुर्ती या क्रॉप टॉप के साथ आसानी से स्टाइल किया जा सकता है। सही फिटिंग, हल्के गहनों और जूतियों या हील्स के साथ इसे पहनकर आप बेहतरीन लुक पा सकती हैं।

हर एक लड़की को सलवार–कुर्ती पहनना काफी पसंद होता है। हालांकि हर बार की तरह आप भी सिंपल और पारंपरिक लुक नहीं चाहते हैं। इसको भी आप ट्रेंडी और फैशनेबल बना सकते हैं। आजकल फारसी सलवार सूट्स का फी चलन चल रहा है। एथनिक आउटफिट में थोड़ा मॉर्डन टच देने के लिए आप फारसी सलवार सबसे बेहरीन ऑप्शन हो सकता है। इसकी खासियत यह है कि इसको आप लूज और फ्लोई लुक ही है, जिसकी वजह से यह पहनने में काफी कंफर्टेबल होती है। अक्सर लोग फारसी सलवार के साथ थोड़ी लॉन्ग कुर्ती पहनते हैं, लेकिन ऐसा जरुरी नहीं है। आप फारसी सलवार को शॉर्ट कुर्ती और क्रॉप टॉप साथ भी पेयर कर सकते हैं। यदि आप सही तरीके स्टाइल करेंगी, तो यह आपके लुक को और भी खास बना देगा।

यदि आप भी अपने एथनिक आउटफिट में थोड़ा मॉर्डन टच देना चाहती हैं, तो हम आपको फारसी सलवार को क्रॉप टॉप और शॉर्ट कुर्ती के साथ स्टाइल करने का तरीका बता रहे हैं।

शॉर्ट कुर्ती के साथ पहनें फारसी सलवार

गौरतलब है कि फारसी सलवार के साथ शॉर्ट कुर्ती लुक एकदम शानदार लगता है। सलवार का घेर और कुर्ती की छोटी लंबाई आपको बैलेंस्ड लुक देगी। यदि आपका प्लेन फारसी सलवार है, तो इसके साथ प्रिंटेड शॉर्ट कुर्ती पहन सकती हैं। वहीं, यदि आप सलवार पर कोई प्रिंट या डिजाइन है, तो उसके साथ सिंपल कुर्ती अच्छी रहेगी। इस लुक के लिए ध्यान रखें–

– कुर्ती बहुत ज्यादा लंबी न हो।

– सलवार और कुर्ती के कलर आपस में मैच या कॉन्ट्रास्ट कर सकती हैं।

– हैवी वर्क वाली कुर्ती की जगह सिंपल डिजाइन लें।

– छोटे ईयररिंग्स और लाइट ज्वेलरी पहन सकते हैं।

फारसी सलवार को क्रॉप टॉप के साथ दें इंडो–वेस्टर्न टच

यदि आपको एकदम मॉर्डन लुक चाहिए, तो आप फारसी सलवार को क्रॉप टॉप के साथ पहन सकती हैं। यह आपको ट्रेडिशनल और वेस्टर्न लुक दोनों ही देगा। प्लेन सलवार के साथ प्रिंटेड क्रॉप टॉप या प्रिंटेड सलवार के साथ प्लेन क्रॉप टॉप आप पहन सकती हैं। बस क्रॉप टॉप खरीदते समय उसकी फिटिंग अच्छे देख लें। ज्यादा ही ढीले क्रॉप टॉप पर फारसी सलवार अच्छा नहीं लगता है। यदि आपको थोड़ा अलग लुक पसंद है, तो कंट्रास्ट कलर ट्राई कर सकती हैं। फुटवियर भी लुक को बना सकता है खासफारसी सलवार के साथ फुटवियर पहनने का खास ख्याल रखा जा सकता है। अगर आप एथनिक आउटफिट पहन रहे हैं, तो आप जूती और फ्लैट्स पहन सकते हैं।

संक्षिप्त

मारुति सुजुकी की जिम्नी, फ्रॉन्क्स और ई-विटारा का जापान को कुल एक्सपोर्ट 1 लाख यूनिट के पार

मारुति सुजुकी इंडिया की भारत में बनी पांच दरवाजे वाली जिम्नी, फ्रॉन्क्स और ई–विटारा का जापान को किया गया कुल निर्यात एक लाख इकाई के पार पहुंच गया है। मारुति सुजुकी इंडिया ने दुनिया के सबसे प्रतिस्पर्धी और उन्नत वाहन बाजारों में से एक जापान को अगस्त 2024 में फ्रॉन्क्स का निर्यात शुरू किया था। इसके बाद दिसंबर 2024 में पांच दरवाजे वाली जिम्नी का निर्यात शुरू किया गया। कंपनी का पहला बैटरी इलेक्ट्रिक वाहन (बीईवी) ई–विटारा सितंबर 2025 में इस निर्यात सूची में शामिल हुआ। इससे सुजुकी के लिए भारत की वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में भूमिका और मजबूत हुई है। पांच दरवाजे वाली जिम्नी और ई–विटारा का विनिर्माण विशेष रूप से भारत में किया जाता है। मोटर वाहन विनिर्माता कंपनी ने कहा कि भारत में बने वाहनों को मिल रही बढ़ती स्वीकार्यता के बीच वित्त वर्ष 2025–26 में मात्रा के लिहाज से जापान मारुति सुजुकी का दूसरा सबसे बड़ा निर्यात बाजार रहा। वहीं चालू वित्त वर्ष 2026–27 के पहले पांच महीनों (अप्रैल–अगस्त) में भी जापान ने यह स्थान बरकरार रखा है। मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) हिसाशी ताकेउची ने कहा, ''पांच दरवाजे वाली जिम्नी, फ्रॉन्क्स और ई–विटारा का जापान को एक लाख से अधिक निर्यात भारत की विनिर्माण उत्कृष्टता की मजबूत पुष्टि है। यह उपलब्धि विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि जापान दुनिया के सबसे चुनौतीपूर्ण और उन्नत वाहन बाजारों में से एक है।'' कंपनी ने कहा कि इन मॉडलों की सफलता से पिछले वित्त वर्ष में जापान में सुजुकी मोटर कॉरपोरेशन को सबसे बड़ा वाहन आयातक बनने में भी मदद मिली। पिछले वित्त वर्ष में जापान में सुजुकी के कुल आयात में मारुति सुजुकी द्वारा निर्मित वाहनों की हिस्सेदारी करीब 100 प्रतिशत रही। ताकेउची ने कहा, ''यह निर्यात उपलब्धि भारत–जापान साझेदारी के उल्लेखनीय विकास का भी प्रतीक है। इस सफलता से जापान मारुति सुजुकी के निर्यात के लिए दूसरा सबसे बड़ा बाजार बनने में मदद मिली है।

अमेजन ने भारत में 20 नए केंद्र और 150 डिलीवरी स्टेशन शुरू किए

ई–कॉमर्स क्षेत्र की प्रमुख कंपनी अमेजन ने सोमवार को आगामी त्योहारी सत्र से पहले भारत में अपने परिचालन नेटवर्क के विस्तार की घोषणा की। कंपनी ने 20 नए भंडार एवं वितरण केंद्र (एफसी), छह छंटाई केंद्र और 150 अंतिम छोर तक आपूर्ति करने वाले डिलिवरी स्टेशन शुरू किए हैं। अमेजन ने बयान में कहा कि यह विस्तार कंपनी द्वारा भारत में अपने परिचालन और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए घोषित 2,800 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश का हिस्सा है। इस विस्तार से भारत में अमेजन की कुल भंडारण क्षमता 50 प्रतिशत बढ़कर 6.4 करोड़ घन फुट हो जाएगी। इन केंद्रों का संचालन और प्रबंधन तीसरे पक्ष के लॉजिस्टिक सेवा प्रदाताओं द्वारा किया जाएगा। चिक्काबल्लापुर, हासन, मेरठ, रामनगर, रायपुर और वाराणसी में स्थित सभी छह नए छंटाई केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं। साथ ही 20 नए एफसी में सात गैर–महानगरीय शहरों में स्थापित किए जा रहे हैं। त्योहारी सत्र के दौरान उपभोक्ताओं की मांग में संभावित वृद्धि को संभालने के लिए ई–कॉमर्स कंपनी ने पहले ही महानगरों के साथ ही दूसरी और तीसरी श्रेणी के शहरों सहित 400 शहरों में 1.6 लाख से अधिक मौसमी रोजगार के अवसर पैदा करने की घोषणा की थी। कंपनी ने बताया कि 118 शहरों में शुरू किए गए 150 नए अंतिम छोर के डिलिवरी स्टेशन में 12 जगहों पर पहली बार अमेजन के ये स्टोर शुरू होंगे। इनमें भोजपुर, बोकाजन, जालौन, जहानाबाद, नामसाई, पुरुलिया, रिभोई, सेनापति, शिवसागर, उदलगुड़ी, उखरुल और वोखा शामिल हैं। अमेजन के वरिष्ठ अधिकारी अभिनव सिंह ने कहा, यह निवेश हमें ग्राहकों और विक्रेताओं की बदलती जरूरतों को पूरा करने में मदद करेगा। साथ ही इससे हजारों काम के अवसर पैदा होंगे और देशभर के समुदायों में आर्थिक वृद्धि को समर्थन मिलेगा।

अगस्त में डब्लूपीआई मुद्रास्फीति बढ़कर 9.92 प्रतिशत पर पहुंची

खाद्य, विनिर्मित वस्तुओं तथा ईंधन और बिजली की कीमतों में बढ़ोतरी के कारण अगस्त में थोक मुद्रास्फीति बढ़कर 9.92 प्रतिशत हो गई, जो जुलाई में 9.78 प्रतिशत थी। सोमवार को जारी सरकारी आंकड़ों से यह जानकारी मिली। खाद्य सूचकांक में मुद्रास्फीति जुलाई के 6.65 प्रतिशत से बढ़कर अगस्त में 7.05 प्रतिशत हो गई। विनिर्मित वस्तुओं की थोक मुद्रास्फीति 8.37 प्रतिशत के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई, जो जुलाई में 8.29 प्रतिशत थी। ईंधन और बिजली में थोक मुद्रास्फीति 22.93 प्रतिशत रही। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने डब्ल्यूपीआई के आंकड़े जारी करते हुए कहा, ''विभिन्न समूहों में खनिज तेल (पेट्रोलियम उत्पादों वाले), खाद्य वस्तुएं, खाद्य उत्पादों का विनिर्माण, बुनियादी धातुओं का विनिर्माण, गैर–खाद्य वस्तुएं तथा रसायनों और रासायनिक उत्पादों का विनिर्माण अगस्त 2026 में थोक मुद्रास्फीति बढ़ने के प्रमुख कारण रहे।'' चालू वित्त वर्ष की शुरुआत से ही थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) आधारित मुद्रास्फीति में लगातार बढ़ोतरी का रुख रहा है। पश्चिम एशिया में युद्ध और इसके कारण होर्मुज जलडमरूमध्य में अवरोध से वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल और उर्वरक की लागत बढ़ी है। भारत में आयात होने वाले अधिकांश कच्चे तेल की आवाजाही इसी रास्ते से होती है, जिसका असर खाद्य कीमतों पर भी पड़ा है। भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति ने पिछले महीने नीतिगत दर को 5.25 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रखा था। समिति ने अल नीनो की स्थिति के बीच दक्षिण–पश्चिम मानसून के कमजोर और असमान रहने का हवाला देते हुए 2026–27 के लिए खुदरा मुद्रास्फीति का अनुमान पांच प्रतिशत रखा था।

'ट्रॉफी चोर' के नारों से गूंजा दुबई स्टेडियम: भारत ने नहीं लिया कप तो मैदान से भाग खड़े हुए नकवी

दुबई, एजेंसी। दुबई में रविवार को भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने श्रीलंका को 72 रन से हराकर रिकॉर्ड आठवीं बार एशिया कप का खिताब अपने नाम किया। मैदान पर हरमनप्रीत कौर की टीम की शानदार जीत का जश्न था, लेकिन मैच के बाद का माहौल ट्रॉफी से ज्यादा विवाद को लेकर चर्चा में आ गया। भारतीय टीम आधिकारिक पुरस्कार समारोह में शामिल ही नहीं हुई और एशियाई क्रिकेट परिषद (ACC) के अध्यक्ष मोहसिन नकवी से ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया। यह विवाद पिछले साल के पुरुष एशिया कप की याद दिलाने वाला रहा, जब सूर्यकुमार यादव की अगुआई वाली भारतीय टीम ने नकवी से ट्रॉफी और पदक लेने से इनकार कर दिया था। 2025 के उस विवाद के बाद भी भारत को अपनी एशिया कप ट्रॉफी नहीं मिली है और वह एसीसी कार्यालय में रखी होने की बात कही गई थी।

आधे घंटे से ज्यादा चला इंतजार, फिर ड्रेसिंग रूम लौटी टीम

महिला एशिया कप फाइनल खत्म होने के बाद ट्रॉफी प्रेजेंटेशन शुरू होने में आधे घंटे से ज्यादा का समय लग गया। इस दौरान भारतीय खिलाड़ियों ने मैदान पर एक साथ बैठक की। इस हडल में बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया और बीसीसीआई उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला भी मौजूद थे। इसके बाद फैन वीडियो में भारतीय टीम को मैदान से निकलकर ड्रेसिंग रूम की ओर जाते हुए देखा गया। खिलाड़ी फिर प्रेजेंटेशन सेरेमनी के लिए मैदान पर नहीं लौटीं। इससे साफ हो गया कि भारत ने पिछले साल के रुख को ही आगे बढ़ाया है। इस बार भी टीम ने नकवी के हाथों ट्रॉफी स्वीकार करने के बजाय समारोह से दूरी बनाए रखी।

श्रीलंका ने लिया उपविजेता का पुरस्कार

भारतीय टीम की गैरमौजूदगी में प्रेजेंटेशन सेरेमनी आगे बढ़ा। श्रीलंकाई कप्तान चमारी अटापट्टू ने नकवी से उपविजेता का चेक लिया। इससे पहले श्रीलंकाई खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ को श्रीलंका क्रिकेट के अंतरिम प्रमुख एरॉन विक्रमरत्ने ने पदक दिए। नकवी ने अटापट्टू को पुरस्कार देने के बाद स्टेडियम से निकलना शुरू कर दिया। इसी दौरान स्टेडियम में मौजूद दर्शकों की प्रतिक्रिया भी सामने आई। सोशल मीडिया पर सामने आए फैन वीडियो में भीड़ की ओर से नकवी के खिलाफ ट्रॉफी चोरश जैसे नारे लगाए जाने का दावा किया गया। हालांकि, इन वीडियो के आधार पर इस घटनाक्रम की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। अमर उजाला सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे इन वीडियो की पुष्टि नहीं करता है।

नकवी ट्रॉफी लेकर नहीं गए, लेकिन भारत भी नहीं आया

पिछले साल पुरुष एशिया कप फाइनल के बाद नकवी ट्रॉफी लेकर उस जगह से भाग गए थे, क्योंकि भारतीय टीम ने उनसे ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया था। उस घटना के बाद सूर्यकुमार यादव की टीम ने बिना ट्रॉफी के मंच पर जश्न मनाया था। इस बार तस्वीर थोड़ी अलग रही। भारतीय टीम मैदान पर ही नहीं लौटी और नकवी भी श्रीलंका के पुरस्कार समारोह के बाद स्टेडियम से निकल गए। इस वजह से महिला एशिया कप की विजेता ट्रॉफी भी भारतीय खिलाड़ियों को मंच पर नहीं सौंपी जा सकी।

बीसीसीआई ने पहले ही साफ कर दिया था रुख

इस पूरे घटनाक्रम से पहले बीसीसीआई ने एसीसी को अपनी स्थिति के बारे में जानकारी दे दी थी। रिपोर्ट के मुताबिक, बोर्ड ने बताया था कि अगर मोहसिन नकवी प्रस्तुति समारोह में मौजूद रहे तो भारतीय टीम उनसे ट्रॉफी स्वीकार नहीं करेगी। बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने यह भी बताया था कि भारतीय टीम एसीसी के उपाध्यक्ष खालिद अल जरूनी से ट्रॉफी लेने के लिए तैयार थी। लेकिन यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया गया। इसके बाद बीसीसीआई ने समारोह से बाहर रहने का फैसला किया। सैकिया ने कहा, हमने अनुरोध किया था कि एसीसी के उपाध्यक्ष ट्रॉफी प्रदान करें, लेकिन इसे स्वीकार नहीं किया गया। इसलिए हमारे पास प्रेजेंटेशन सेरेमनी का हिस्सा नहीं बनने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। किसी न किसी स्तर पर हमें दोनों ट्रॉफियां वापस मिल जाएंगी।

अजीत अगरकर की कुर्सी बचेगी या जाएगी?

बीसीसीआई से तनातनी! 48 घंटे में तय हो सकता है मुख्य चयनकर्ता का भविष्य

मुंबई। भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर के भविष्य को लेकर अब जल्द तस्वीर साफ हो सकती है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, अगले 48 घंटे में अगरकर और भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के पदाधिकारियों के बीच उनके कार्यकाल के विस्तार को लेकर अहम चर्चा होनी है। इस बैठक के बाद तय हो सकता है कि अगरकर को चयन समिति के प्रमुख के तौर पर आगे भी जिम्मेदारी मिलेगी या फिर बोर्ड नए विकल्प की तलाश करेगा।

48 घंटे में होगा भविष्य पर फैसला?

स्पोर्टस्टार की रिपोर्ट के मुताबिक, अगरकर और बीसीसीआई के पदाधिकारी अगले दो दिनों में बातचीत करेंगे। इस दौरान उनके कार्यकाल के विस्तार को लेकर आगे की रणनीति पर चर्चा हो सकती है। रिपोर्ट में एक बीसीसीआई पदाधिकारी के हवाले से कहा गया है कि दोनों पक्ष फिलहाल विस्तार को लेकर सकारात्मक रुख रखते हैं और कुछ शुरुआती दिक्कतों को जल्द सुलझाने की उम्मीद है।

हालांकि, इसी रिपोर्ट में पिछले दो महीनों से बीसीसीआई के पदाधिकारियों और चयन समिति के बीच तनातनी चलने का भी दावा किया गया है। अगरकर का तीन सितंबर को हुई बीसीसीआई की प्रदर्शन समीक्षा बैठक में शामिल नहीं होना भी चर्चा का विषय बना था।

जून में खत्म होना था कार्यकाल, मिला था विस्तार

अगरकर को चार जुलाई 2023 को बीसीसीआई का मुख्य चयनकर्ता नियुक्त किया गया था। उनका शुरुआती कार्यकाल जून 2026 में खत्म होना था, लेकिन बोर्ड ने उन्हें कुछ महीने का विस्तार दिया था। अब उनका मौजूदा कार्यकाल चार अक्तूबर को समाप्त होना है। अगरकर एक साल के विस्तार के लिए पात्र हैं। हालांकि, बीसीसीआई ने अभी तक उनके भविष्य को लेकर आधिकारिक तौर पर कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी है। अगरकर के कार्यकाल में भारतीय टीम ने 2024 और 2026 टी20 विश्व कप के अलावा 2025 चौंपियंस ट्रॉफी का खिताब भी जीता। इसी दौरान विराट कोहली, रोहित शर्मा जैसे दिग्गजों ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के अलग–अलग प्रारूपों से संन्यास लिया। वहीं, रविचंद्रन अश्विन ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को ही अलविदा कह दिया था। इतना ही नहीं, 2026 में टी20 विश्वकप जिताने वाले कप्तान सूर्यकुमार यादव को टूर्नामेंट के बाद टीम से बाहर कर दिया गया। रोहित से वनडे की कप्तानी छीन ली गई।

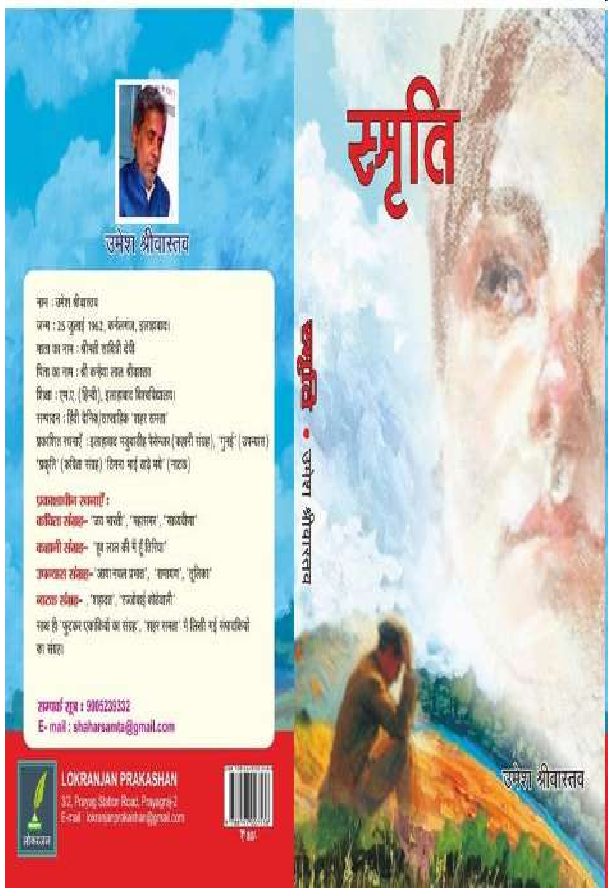

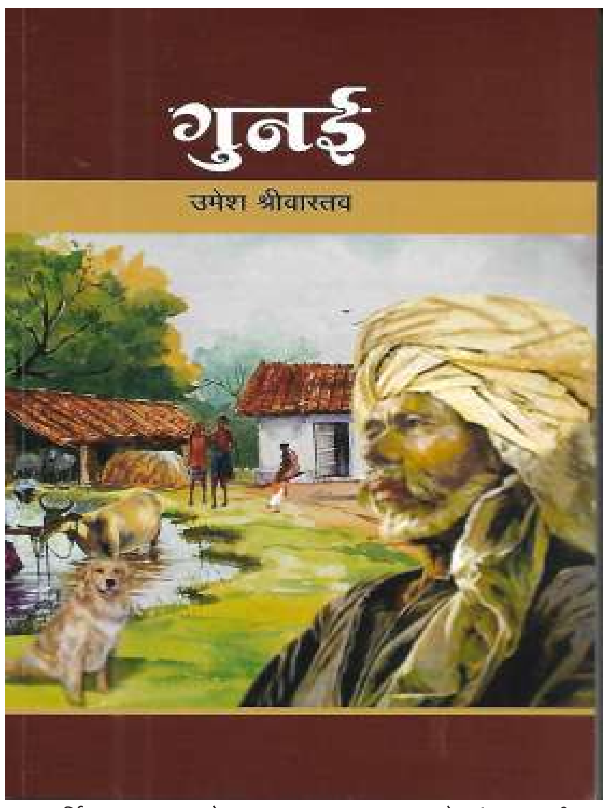

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

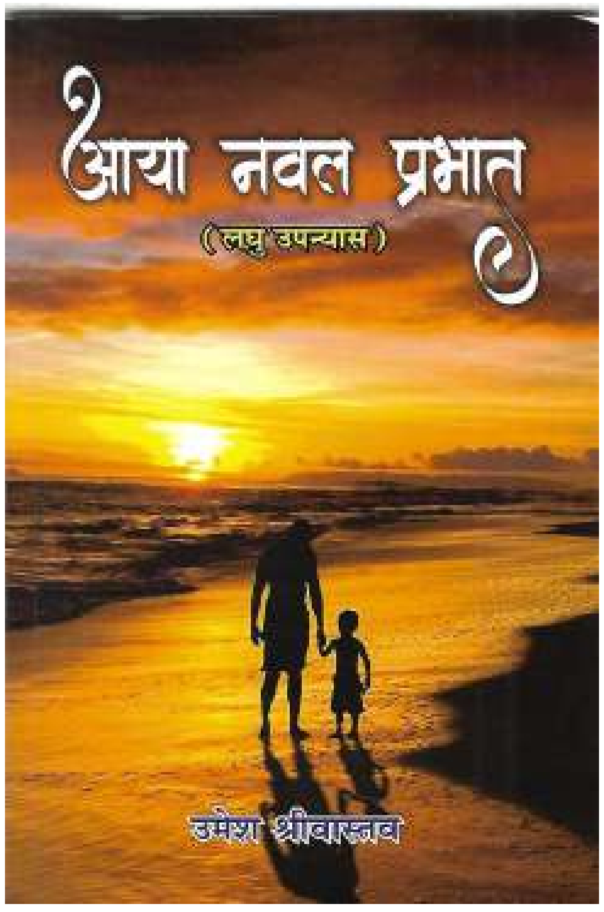

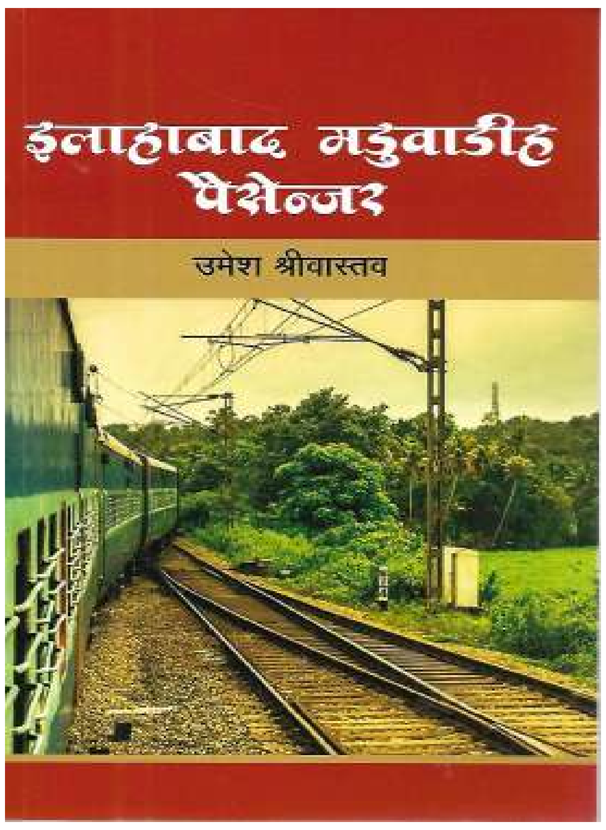

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

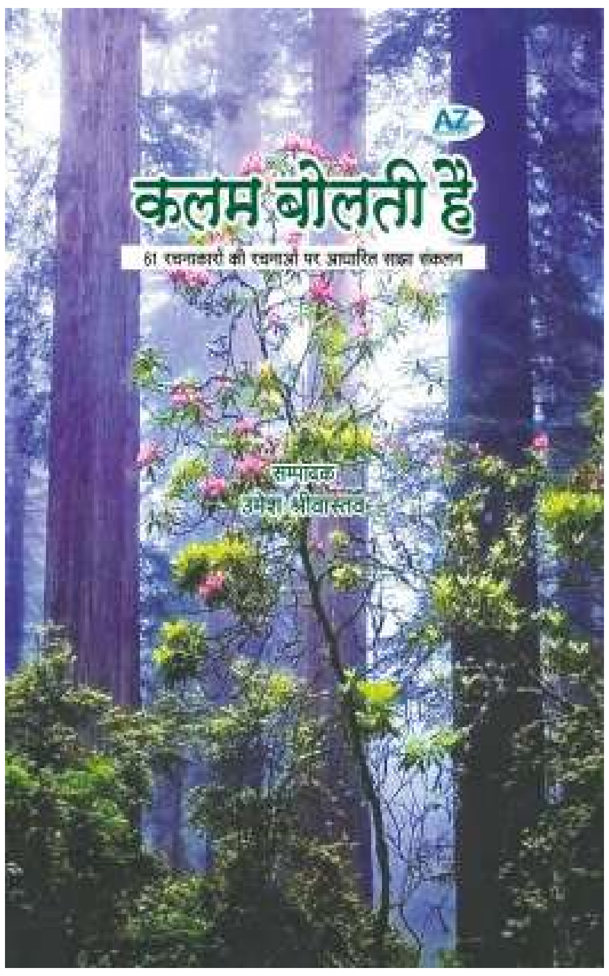

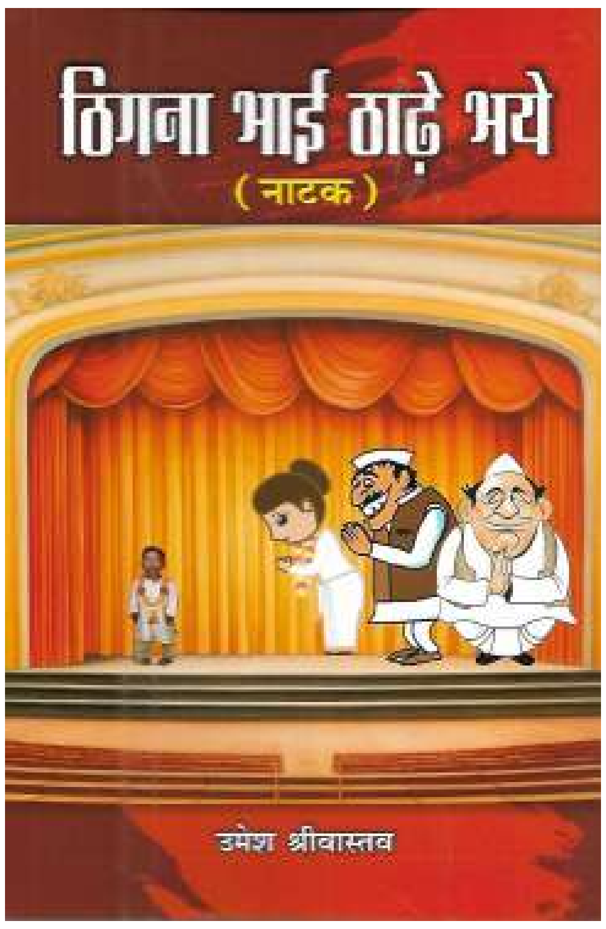

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

FATF Meeting से पहले मक्कार पाकिस्तान का नया पैंतरा, आतंकी मसूद अजहर पर रखा 70 लाख का इनाम

पाकिस्तान ने जैश–ए–मोहम्मद के प्रमुख मसूद अज़हर का नाम फेडरल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी की सबसे ज़्यादा वांछित आतंकवादियों की रेड बुक में शामिल करके उस पर 70 लाख रुपये का इनाम घोषित किया है। यह कदम अक्टूबर में होने वाली फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स की बैठक से पहले उठाया गया है और इसे पाकिस्तान की ओर से एक प्रतीकात्मक कार्रवाई के तौर पर देखा जा रहा है, ताकि यह दिखाया जा सके कि वह आतंकवाद के खिलाफ कदम उठा रहा है।

पाकिस्तान ने पहले दावा किया था कि मसूद अज़हर देश से गायब हो गया है और अफ़गानिस्तान में छिपा हुआ है। 2021 में, थ्। ने उसे पकड़ने में मदद करने वाली जानकारी के लिए 50 लाख रुपये के इनाम की घोषणा की थी। पाँच साल बाद, अब इस इनाम की राशि 20 लाख रुपये और बढ़ा दी गई है। पाकिस्तान 2021 से ही यह कहता आ रहा है कि मसूद अज़हर देश में नहीं है, बल्कि अफ़गानिस्तान में है। हालाँकि, भारतीय खुफिया एजेंसियों के सूत्रों के अनुसार, पिछले छह महीनों में किए गए तकनीकी विश्लेषण से पता चला है कि अज़हर पाकिस्तान के सिंध प्रांत के नवाबशाह शहर में छिपा हुआ है। FIA की हालिया अपडेटेड लिस्ट में 26/11 मुंबई आतंकी हमले को अंजाम देने वालों की मदद करने के आरोपी 19 आतंकवादियों के नाम भी शामिल हैं। इनमें वे लोग भी हैं जिन्होंने कथित तौर पर आर्थिक मदद दी और हमलावरों द्वारा इस्तेमाल की गई नावों को चलाने में मदद की। इनमें से 17 लोगों की तस्वीरें और 26/11 हमलों में उनकी कथित भूमिकाओं का विवरण शामिल किया गया हैहालांकि, पाकिस्तान ने दो लोगों के मामले में उनकी तस्वीरें, लश्कर–ए–तैयबा के साथ उनके कथित संबंधों का विवरण और मुंबई हमलों में उनकी खास भूमिकाओं की जानकारी हटा दी है और अपडेटेड लिस्ट में सिर्फ़ उनके नाम रखे हैं।

यमन में तेज हुई भीषण जंग, हूथी विद्रोहियों के हमलों से ग्लोबल तेल सप्लाई पर मंडराया संकट

यमन में संघर्ष और तेज़ हो गया। सरकारी सेनाओं ने लाल सागर के पास ईरान समर्थित हूथी विद्रोहियों पर हमले किए, और हूथियों ने पड़ोसी देश सऊदी अरब पर हमले किए, जो यमन की सरकार का समर्थन करता है। यमनी सरकार ने कहा है कि पिछले हफ़्ते मोखा बंदरगाह शहर और बाब–अल–मंदेब जलडमरूमध्य (जो एक अहम शिपिंग रूट है) में एक द्वीप के हाथ से निकल जाने के बाद, वह लाल सागर के तट पर और सेना भेजेगी। संयुक्त राष्ट्र की माइग्रेशन एजेंसी के अनुसार, सितंबर की शुरुआत से फिर से शुरू हुई लड़ाई की वजह से 82,000 से ज़्यादा लोग विस्थापित हुए हैं। हालात बिगड़ने, खासकर सऊदी अरब के तेल इंफ्रास्ट्रक्चर और रेड सी में शिपिंग पर हूथी हमलों की वजह से, दुनिया भर में तेल की सप्लाई और कीमतों पर दबाव बढ़ गया है। रेड सी के किनारे होदेइदा प्रांत के खोखा शहर से भागने वाली एक महिला ने बताया कि जब वह आधी रात को वहां से निकल रही थी, तो पास ही एक मोर्टार शेल गिरा; इसके कुछ ही देर बाद हूथी विद्रोहियों ने शहर पर कब्ज़ा कर लिया। उसने अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा की चिंता के कारण नाम न बताने की शर्त पर कहा मैंने अपनी आँखों से कारों और बसों को जलते हुए देखा और सड़क पर बच्चों और महिलाओं की लाशें पड़ी थीं वह मंज़र बहुत भयानक था। सऊदी अधिकारियों ने रविवार दोपहर दक्षिणी शहर आभा और खमीस मुशैत प्रांत में सायरन बजाकर लोगों को संभावित हमले से बचने के लिए सुरक्षित जगह पर जाने की चेतावनी दी। हाल के हफ़्तों में हूथी विद्रोहियों ने इन दोनों इलाकों पर कई बार हमले किए हैं।

दक्षिण अफ्रीका के वेस्टर्न केप में भीषण सड़क हादसा, कई गाड़ियां टकराई, 21 की मौत

वेस्टर्न केप में प्रिंस अल्बर्ट और लीउ–गामका के बीच छ1 पर हुई एक भयानक दुर्घटना में 21 लोगों की मौत हो गई है। आरटीएमसी के अनुसार, यह दुर्घटना सोमवार तड़के हुई और इसमें टोयोटा क्वांटम टैक्सी और सुजुकी ब्रेज़ौन्ट शामिल थीं। प्रवक्ता साइमन ज़वाने ने कहा कि मरने वालों की संख्या बदल सकती है क्योंकि इमरजेंसी सर्विस की टीमें घटनास्थल का जायज़ा ले रही हैं। उन्होंने कहा कि दुर्घटना का कारण अभी तक पता नहीं चल पाया है और RTMC के दुर्घटना जांचकर्ता इसकी जांच कर रहे हैं। ज़वाने ने कहा यह एक ऐसी घटना है जिस पर अभी जानकारी आ रही है। जैसे–जैसे जानकारी मिलेगी और उसकी पुष्टि होगी, आगे की जानकारी दी जाएगी। वेस्टर्न केप के मोबिलिटी MEC, इसाक सिलेकू के दुर्घटना वाली जगह का दौरा करने की उम्मीद है, ताकि वे स्थिति का जायजा ले सकें और ट्रैफिक अधिकारियों व इमरजेंसी मेडिकल कर्मियों से जानकारी ले सकें। सिलेकू ने इस दुर्घटना को जान–माल का भारी नुकसान बताया। सिलेकू ने कहा हमारी संवेदनाएं उन लोगों के परिवारों और प्रियजनों के साथ हैं जिन्होंने इस दुखद टक्कर में अपनी जान गंवाई है। हमारी ट्रैफिक और इमरजेंसी रिस्पॉन्स टीमें मुश्किल हालात में भी घटनास्थल पर लगातार काम कर रही हैं।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर 9190052 39332
919450482227

भारत के प्रति अत्यधिक झुकाव से बाहर निकलना होगा, हसीना के जाने के बाद ढाका का रुख सख्त, रिश्तों को 'रीसेट' करने की तैयारी

बांग्लादेश की अंतरिम/नई सरकार ने भारत के साथ अपने कूटनीतिक संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करने की बात कही है। बांग्लादेश ने स्पष्ट किया है कि वह आपसी हितों के आधार पर भारत के साथ नए द्विपक्षीय संबंध बनाना चाहता है। इसके साथ ही पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के कार्यकाल के दौरान दोनों देशों के बीच रहे संबंधों को असहज और अत्यधिक एकतरफा झुकाव वाला करार दिया। बांग्लादेश के विदेश राज्य मंत्री हुमायूं कबीर ने संवाददाताओं से बातचीत करते हुए कहा कि ढाका अब भारत के साथ रिश्तों में अधिक संतुलित दृष्टिकोण अपनाना चाहता है। उन्होंने बहुपक्षीय मंचों की तुलना में सीधी द्विपक्षीय बातचीत पर जोर दिया। विदेश राज्य मंत्री हुमायूं कबीर ने रविवार को ये बातें कहीं। इससे दो दिन पहले बांग्लादेश ने कहा था कि प्रधानमंत्री तारिक रहमान भारत में होने वाले ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हिस्सा नहीं लेंगे क्योंकि उन्हें इस कार्यक्रम के लिए आमंत्रित नहीं किया गया था; इसके बजाय निमंत्रण बे ऑफ बंगाल इनिशिएटिव फॉर मल्टी–सेक्टरल टेक्निकल एंड इकोनॉमिक कोऑपरेशन के अध्यक्ष को भेजा गया था। नई दिल्ली में दो दिन तक चला ब्रिक्स शिखर सम्मेलन रविवार को संपन्न हुआ। भारत ने रहमान को ठप्डैज्म्ब अध्यक्ष के तौर पर शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया था, जबकि फरवरी में उन्हें एक अलग द्विपक्षीय निमंत्रण भी भेजा गया था। पर्यटकोंके घूमने–फ़िरने की जगहें

भारत के साथ रिश्ते नए सिरे से शुरू करना चाहते हैं

कबीर ने पत्रकारों से कहा कि बांग्लादेश भारत के साथ अपने द्विपक्षीय रिश्तों को श्नए सिरे से शुरूश करना चाहता है और बहुपक्षीय मंचों के बजाय सीधी बातचीत के जरिए नए संबंधों की ओर बढ़ना चाहता है। उन्होंने कहा, ष्हम एक नए रिश्ते की ओर बढ़ना चाहते हैं, जो बहुपक्षीय मंच के बजाय द्विपक्षीय बातचीत के जरिए होना चाहिए। अगस्त 2024 में युवाओं के नेतृत्व वाले आंदोलन के बाद सत्ता से हटाए जाने पर शेख हसीना भारत भाग आई थीं और नई दिल्ली ने उन्हें शरण दी थी, जिसके बाद से भारत–बांग्लादेश के रिश्तों में तनाव आ गया है। उन्होंने कहा कि भारत के साथ रिश्तों को अन्य देशों के साथ बांग्लादेश के व्यापक संबंधों के हिस्से के रूप में देखते हुए आपसी हितों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, हमें भारत के प्रति अत्यधिक आकर्षण से बाहर निकलना होगा। भारत बस एक और देश है और बांग्लादेश उसके साथ अच्छे द्विपक्षीय संबंध चाहता है। एक सवाल का जवाब देते हुए मंत्री ने कहा, भारत में नाश्ता, भारत में लंच, भारत में डिनर –– तो फिर आप अपना खाना कब खाएंगे?

बांग्लादेश की प्रधानमंत्री अमेरिका जाएँगी

कोबीर ने यह भी बताया कि प्रधानमंत्री रहमान 21 सितंबर को न्यूयॉर्क के लिए रवाना होंगी, जहाँ वे न्छ जनरल असेंबली के 81वें सत्र में शामिल होंगी और 26 सितंबर तक वहीं रहेंगी। जब उनसे न्छळ। के दौरान रहमान और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच मुलाकात की संभावना के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि बड़े अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के दौरान ऐसी बैठकें अक्सर आखिरी समय में तय होती हैं। कोबीर ने कहा, ष्प्रधानमंत्री की यात्रा का मुख्य मकसद न्छ जनरल असेंबली को संबोधित करना है।ष उन्होंने आगे कहा कि साइडलाइन बैठकों की जानकारी सही समय पर पता चल जाएगी।

700 करोड़ टन तेल की कमाई, रूस की यारी, भारत की लॉटरी

पश्चिमी देशों और अमेरिका के कड़े प्रतिबंधों के बीच रूस ने बर्फीले आर्कटिक के सीने को चीर कर एक ऐसा तेल का खजाना खोल दिया है जिसने दुनिया के ऊर्जा समीकरण को हिला कर रख दिया। राष्ट्रपति व्लादमीर पुतिन भारत हैं। लेकिन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए उन्होंने साइबेरिया के सबसे बड़े बोस्तोक ऑयल प्रोजेक्ट से कच्चे तेल की पहली खेप को हरी झंडी दिखा दी है। अब यह खबर सिर्फ रूस तक सीमित नहीं है। इसका सबसे बड़ा फायदा भारत को मिलने जा रहा है। जमीन के नीचे दबा 700 करोड़ टन तेल का महाभंडार और भारत के लिए स्टेट ऑफ हॉर्मोज के संकट से हमेशा के लिए आजादी का रास्ता। रूस के उत्तरी साइबेरिया स्थित तैमीर प्रायद्वीप में शुरू हुआ वोक ऑयल प्रोजेक्ट दुनिया के सबसे बड़े ऊर्जा प्रोजेक्ट्स में से एक माना जा रहा है। अब इसका पहला पॉइंट है विशाल भंडार। अनुमान के मुताबिक इस पूरे इलाके में करीब 700 करोड़ टन कच्चे तेल का भंडार मौजूद है। दूसरा पॉइंट है उत्पादन लक्ष्य। रूस का लक्ष्य साल 2027 की दूसरी छमाही तक इस प्रोजेक्ट से सालाना 3 करोड़ टन यानी कि 30 मिलियन टन कच्चा तेल निकालने का है। तीसरा पॉइंट है पैमाना। इसे समझने के लिए आंकड़ा देखिए। भारत ने पूरे वित्त वर्ष साल 2024–25 में कुल मिलाकर 2.87 करोड़ टन घरेलू तेल का उत्पादन किया था। यानी रूस के इस अकेले प्रोजेक्ट का शुरुआती लक्ष्य भारत के कुल सालाना घरेलू उत्पादन से भी ज्यादा है। अब –40 से 50° के तापमान में चल रहे इस मेगा प्रोजेक्ट में अब तक करीब 4.4 लाख करोड़ का भारी भरकम निवेश हो चुका है। यहां 500 से अधिक लोग काम कर रहे हैं और 16,000 से ज्यादा भारी मशीनें तैनात है। परिवहन के लिए 3500 मीटर लंबे रनवे वाला एक नया एयरपोर्ट भी तैयार किया जा रहा है।

प्रोजेक्ट का भारत के लिए सबसे बड़ा रणनीतिक महत्व क्या है?

वर्तमान में भारत अपनी जरूरत का लगभग 50ः कच्चा तेल हॉर्मूज के संकरित समुद्री रास्ते से मंगाता है। जनवरी फरवरी 2026 के आंकड़े के मुताबिक इस रास्ते से भारत रोजाना करीब 26 लाख बैरल तेल आयात कर रहा था जो मुख्य रूप से इराक, सऊदी अरब, यूएई और कुवैत से आता है। लेकिन यह रास्ता हमेशा से बारूद के ढेर पर रहता है। अमेरिका, ईरान का तनाव ही देख लीजिए। खाड़ी में सैन्य तनाव, प्रतिबंध और टैंकरों पर हमलों के खतरे लगातार बने रहे हैं। दूसरा पॉइंट है इसका सप्लाई चेन का चोक पॉइंट। अगर हरमूज में कोई भी रुकावट आती है तो भारत में तेल की कीमतें आसमान छू सकती हैं और वह देखा भी हमने है। यहीं पर पुतिन का वो स्टोक प्रोजेक्ट भारत के लिए गेम चेंजर साबित हुआ। वो स्टोक प्रोजेक्ट से निकलने वाला तेल 790 कि.मी. लंबी पाइपलाइन के जरिए कारा सागर के बुक सेवेवर टर्मिनल तक पहुंचेगा। वहां से बड़े ऑयल टैंकरों के जरिए इसे सीधे भारत और अन्य देशों में भेजा जाएगा। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है। फायदा यह है रूस से आने वाले इन जहाजों और की संकरी खाड़ी से गुजरने की कोई जरूरत नहीं होगी। यह एक पूरी तरह स्वतंत्र और सुरक्षित समुद्री मार्ग है। जानकारों का मानना है कि इस प्रोजेक्ट के पूरी क्षमता से शुरू होने के बाद भारत की हॉर्मू पर निर्भरता घटकर लगभग आधी रह सकती है। यह केवल खरीदार और विक्रेता का हिस्सा नहीं है। भारत इस प्रोजेक्ट में एक अहम साझेदार है। चलिए अब जान लेते हैं भारत की 49.9ः हिस्सेदारी और आर्थिक फायदे।

PTI के इस्लामाबाद प्रदर्शन से पहले पंजाब में धारा 144 लागू, 17 सितंबर तक रोक

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक–ए–इंसाफ (पीटीआई) के संघीय राजधानी में प्रस्तावित विरोध प्रदर्शन से पहले पूरे प्रांत में 17 सितंबर तक सभी प्रकार की सभाओं पर प्रतिबंध लगा दिया है। खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री सोहेल अफरीदी ने 27 सितंबर को इस्लामाबाद की ओर प्रस्तावित विरोध मार्च के लिए समर्थन जुटाने के वास्ते सोमवार से पंजाब के 13 शहरों का दौरा करने की घोषणा की थी। पंजाब के गृह विभाग ने रविवार को दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 144 के तहत पूरे प्रांत में पांच या उससे अधिक लोगों के एकत्र होने पर 17 सितंबर तक रोक लगा दी। सार्वजनिक स्थानों पर हथियारों के प्रदर्शन और गैरकानूनी जमावड़े को उकसाने वाली मानी जाने वाली हर तरह की गतिविधियों पर भी प्रतिबंध लगाया गया है। हालांकि विवाह, अंतिम संस्कार, धार्मिक आयोजनों, अदालती कामकाज और सरकारी कार्यों से संबंधित सभाओं को इससे छूट दी गई है। इस्लामाबाद और पड़ोसी रावलपिंडी में प्राधिकारी, खान की पार्टी के विरोध प्रदर्शन को विफल करने के लिए कदम उठा रहे हैं। प्रदर्शन से पहले मुख्य सड़कों और राजमार्गों पर अवरोधक लगाने के लिए मालवाहक कंटेनर रखे गए हैं। समाचार पत्र 'डॉन' के अनुसार, संघीय सरकार ने इस्लामाबाद की सुरक्षा के लिए पंजाब से 15,000 पुलिसकर्मी उपलब्ध कराने को भी कहा है। सिंध से 8,000 और बलूचिस्तान से 500 पुलिसकर्मी बुलाए जाएंगे। इस तरह कुल 23,500 पुलिसकर्मियों की तैनाती 20 सितंबर तक किए जाने की योजना है। डॉन' के अनुसार, रावलपिंडी के पुलिस प्रमुख हसन मुश्ताक सुखेरा ने वास्तविक आपात स्थिति को छोड़कर सभी पुलिस अधिकारियों की अक्टूबर तक छुट्टियां रद्द कर दी हैं। जिला प्राधिकारियों ने लोक व्यवस्था बनाए रखने संबंधी कानून की धारा तीन के तहत पार्टी के दर्जनों कार्यकर्ताओं को एहतियातन हिरासत में लेने के आदेश भी जारी किए हैं। इस बीच प्रधानमंत्री के राजनीतिक मामलों के सलाहकार राणा सनाउल्लाह ने लाहौर में पत्रकारों से बातचीत के दौरान आरोप लगाया कि विपक्षी दल इस्लामाबाद में ''हथियारबंद समर्थकों'' को लाने की योजना बना रहा है। प्रधानमंत्री के सहयोगी ने यह भी चेतावनी दी कि आतंकवादी इस रैली का फायदा उठाकर जनता और सरकार के बीच दूरी बढ़ाने की कोशिश कर सकते हैं। उन्होंने दावा किया कि विरोध प्रदर्शन अंततः विफल हो जाएगा। पीटीआई की पंजाब इकाई के सूचना सचिव शौकत बसरा ने आरोप लगाया कि पार्टी के नेतृत्व और कार्यकर्ताओं के खिलाफ सुनियोजित अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने दावा किया कि पूरे प्रांत में छापेमारी के दौरान महिलाओं समेत सैकड़ों कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया गया है। इस बीच मुख्यमंत्री अफरीदी ने खान की पार्टी के एक कार्यकर्ता की मौत के बाद पंजाब के अपने प्रस्तावित दौरे में बदलाव का संकेत दिया।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

ऑपरेशन सिंदूर में ध्वस्त हुए पीओके के आतंकी कैंप फिर तैयार

भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर में पूरी तरह जमींदोज किए गए पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (च्व्ज्ञ) स्थित आतंकी ठिकाने एक बार फिर से खड़े किए जा रहे हैं। इंडिया टीवी को मिले एक्सक्लूसिव वीडियो और तस्वीरों से यह बड़ा खुलासा हुआ है कि बहावलपुर, सवाई नाला और मुज़फ़्फ़राबाद में आतंकी संगठनों के लॉन्च पैड्स और ट्रेनिंग कैंपों का पुनर्निर्माण

तेजी से चल रहा है। इंडिया टीवी ने पहले भी इन आतंकी ठिकानों की तस्वीरें और वीडियो दिखाए थे। अब, इन नए एक्सक्लूसिव वीडियो में इन जगहों पर नई दीवारों और नई ईंटों से किए गए निर्माण को साफ देखा जा सकता है।

पहला वीडियो लश्कर–ए–तैयबा के सवाई नाला कैंप का है

पहला वीडियो लश्कर–ए–तैयबा के सवाई नाला कैंप का है। कहा जाता है कि यह आतंकियों के रहने का ठिकाना था। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान यह कैंप पूरी तरह नष्ट हो गया था, लेकिन अब इसे फिर से बना लिया गया है।

दूसरी तस्वीर च्व्ज्ञ के मुज़फ़्फ़राबाद में स्थित जैश–ए–मोहम्मद के केंद्र, सैदा बिलाल कैंप की है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान इस ठिकाने को भी निशाना बनाया गया था और इसे भारी नुकसान पहुंचा था। अब वहां नई दीवारों और नई ईंटों से निर्माण के सबूत दिख रहे हैं। रक्षा मंत्रालय की रिपोर्ट में भी इन आतंकी ठिकानों का ज़िक्र किया गया था। रिपोर्ट के अनुसार, ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय सशस्त्र बलों ने इन आतंकी ठिकानों को पूरी तरह नष्ट कर दिया था। इन ठिकानों का फिर से सामने आना इस बात का संकेत है कि पाकिस्तान में आतंकी ढांचे को फिर से खड़ा करने की कोशिश जारी है।

पिछले महीने, पूर्व सेना प्रमुख जनरल एम एम नरवणे ने कहा था कि ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान के प्रति भारत के नज़रिए में ष्बहुत बड़ा बदलावष दिखाया, क्योंकि हमलों में न केवल सीमा के पास के आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया गया, बल्कि पड़ोसी देश के अंदर उनके समर्थकों को भी निशाना बनाया गया। उन्होंने यह भी कहा कि एक साल पहले पहलगाम आतंकी हमले के बाद किए गए ऑपरेशन सिंदूर ने यह दिखाया कि आतंकियों को समर्थन देने वाले भारतीय कार्रवाई से बच नहीं सकते, चाहे वे कहीं भी हों।

उन्होंने कहा कि भारत की सैन्य कार्रवाई पहले मुख्य रूप से सीमा के पास स्थित आतंकी ठिकानों पर केंद्रित थी और उन्होंने उरी और पुलवामा सहित पहले हुए आतंकी हमलों का ज़िक्र किया। उन्होंने कहा, ष्पहले जब भी ऐसे हमले हुए –– जैसे उरी के बाद, और पुलवामा के बाद बालाकोट स्ट्राइक –– तो हम ज़्यादातर बॉर्डर के पास मौजूद आतंकियों के ठिकानों को ही निशाना बनाते थे। सर क्रीक सेक्टर में पाकिस्तान की बढ़ती सक्रियता और ष्ऑपरेशन अबाबीलष चलाने की खबरों पर बात करते हुए, जनरल नरवणे (रिटायर्ड) ने कहा कि ऐसी गतिविधियां होती रहती हैं, साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें इस ऑपरेशन के बारे में पूरी जानकारी नहीं है।इसे भी पढ़ेंरू ईरानी राष्ट्रपति ने हिंदू धर्मगुरु के पैर छुए? पाकिस्तानी जहर क्यों उगलने लगे

भारत–चीन संबंधों पर बात करते हुए, जनरल नरवणे (रिटायर्ड) ने कहा कि नेशनल सिक्योरिटी एडवाइजर अजीत डोभाल और चीनी विदेश मंत्री वांग यी के बीच हाल ही में हुई बातचीत को दोनों देशों के बीच लंबे समय से चल रहे सीमा विवाद के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि यह बैठक स्पेशल रिप्रेजेंटेटिव–लेवल की बातचीत का 25वां दौर था और यह पहली बार नहीं हो रही थी। उन्होंने कहा कि मुख्य बात यह ध्यान में रखनी चाहिए कि भारत और चीन के बीच सीमा विवाद है।

इंडोनेशिया के जावा सागर में नौका डूबने से 6 की मौत, लापता 129 लोगों के लिए बचाव अभियान तेज

इंडोनेशिया के प्राधिकारियों ने जावा सागर में खराब मौसम के कारण एक नौका के पलटने के बाद लापता हुए कई लोगों की तलाश सोमवार को तेज कर दी। इस हादसे में कम से कम छह यात्रियों की मौत हो गई है जबकि 129 लोग अब भी लापता हैं। 'विर्गो ट्रांसपोर्ट 8' नाम की नौका में 240 से अधिक लोग सवार थे।

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।